लाल

मादा कैक्टस

लक्ष्मीनारायण लाल

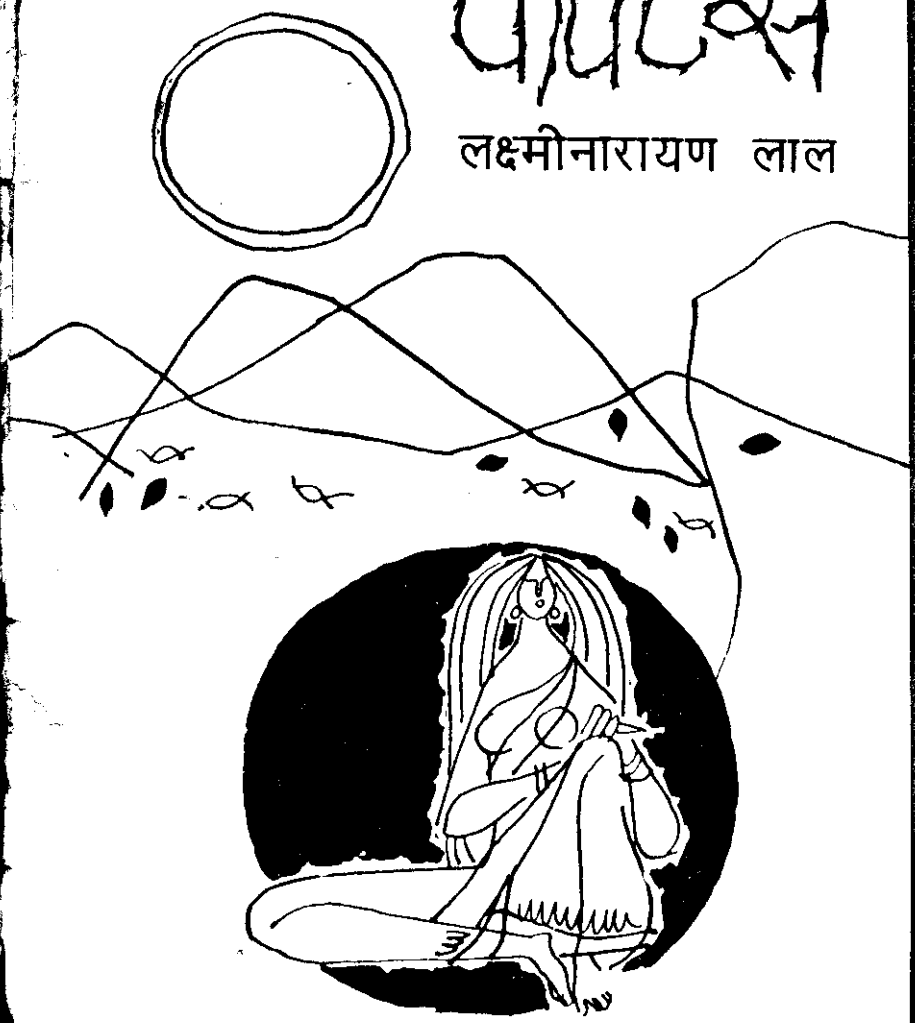

नये संस्करण पर दो शब्द

••

अपने प्रथम रूप में 'मादा कैक्टस' को जहां-जहां भी मैंने मंच पर देखा है, मुझे अनुभव हुआ है, इसे फिर से छुआ जाय। पहले इसे छूते हुए न जाने कैसा डर लगता था। इसीलिए गत चार-पांच वर्षों से नये संस्करण के लिए इसे रोक रखा था।

पर इसे दुबारा छूना बड़े जोखिम का काम था और कहीं मन के किसी दुर्गम कोने में वह डर मौजूद था। और उसी डर से आंख मिलाकर इसे मैंने दुबारा छुआ है। बल्कि साहस किया है।

यह दो शब्द लिखने के लिए क्षमा चाहूंगा।

८/१७ पूर्वी पटेलनगर,
नयी दिल्ली-८

लक्ष्मीनारायण लाल

पहले संस्करण से

••

आप मुझे क्षमा करें, 'मादा कैक्टस' नाटक है, नाटक की किताब नहीं। लेकिन आप मुझे क्षमा दे कैसे सकेंगे? विशुद्ध दर्शक की हैसियत से मैं वह पहला व्यक्ति होऊंगा, जो इस स्थापना को अभियोग समझूं।

यह आखिर है क्या, जिसे आप पढ़ने जा रहे हैं—यह पुस्तक है—पांडुलिपि का मुद्रित रूप। यह नाट्य-कृति है, पर इसकी सजीवता तो रंगमंच-अनुष्ठान में है—अभिनेताओं में, रंगशिल्प में, निर्देशन में, अर्थात् उस सामूहिक मनोवृत्ति तथा परिवेश में, जब यह दृश्यगत हो और आप दर्शक हों। ऐसे दर्शक, नाटक के जादू और उसके सम्मोहन में फुटलाइट के पीछे कहीं बंधे हुए—नाटक के साथ जीते हुए। लेकिन इस प्रसंग में मैं एक बात स्पष्ट कह दूं—रंगमंच अभिनेता, मंचसज्जा, संगीत, प्रकाश तथा अन्य कलाओं का मात्र मिश्रण नहीं है। अर्थात् रंगमंच कई कलाओं का योग नहीं है, अपितु यह स्वयं एक स्वायत्त मौलिक कला है, जिसकी अपनी स्वतन्त्र सत्ता है। और सबसे ऊपर इसका अपना एक धर्म है। जो इस धर्म को सिर-आंखों पर लेकर नहीं चलता, वह रंगमंच को कभी नहीं पा सकता। तभी मैं कहता हूं, रंगमंच के लिए साधन-सम्पन्नता मुख्य नहीं है; इसके लिए रंगमंचगत-धर्मनिष्ठा मुख्य है।

पर अभी तो आप 'मादा कैक्टस' पढ़ने जा रहे हैं, हो सकता है

आपने इसे मंच पर प्रस्तुत होते हुए भी देखा हो, या भविष्य में कभी देखें। भविष्य में इसके मंच-रूप के प्रति मुझे अत्यधिक आस्था है, जब किसी उद्‌बुद्ध निर्देशक की संवेद्य कला से यह अपना वास्तविक सृजन पायेगा —ऐसा निर्देशक, जो यह जानेगा कि 'मादा कैक्टस' पहेली के रूप में क्यों लिखा गया ? इसमें कुछ बुझाया क्यों गया है—आदि में भी, अन्त में भी ? क्यों नहीं यह इतिवृत्तात्मक ढंग से लिखा गया ? क्यों नहीं इसमें परम्परा ढोयी गई—प्रथम अंक, उसमें दस दृश्य, द्वितीय अंक उसमें ग्यारह दृश्य, फिर तीसरा अंक, चौथा और पांचवां अंक !

आप भी कहेंगे, इस नाटक में बात सीधे ढंग से क्यों नहीं कही गई ?

बात टेढ़ी थी, इसीलिए। तभी इसमें प्रतीक का सहारा लेना पड़ा। संगीत से लेकर कार्यों तक, घटनाओं से पात्रों तक, नीलाम के बाजे से अनाथालय के बच्चों के गीत तक, मादा कैक्टस से मुर्गाबी चिड़िया तक।

आप कह सकते हैं कि, अजी, इतने प्रतीक !

प्रतीक की भाषा कौन समझे ?

पर मैं कहता हूं, प्रतीक की अपनी कोई अलग भाषा नहीं होती, प्रतीक तो स्वयं नाटक की प्रकृत भाषा और सहज बोल है—ऐसी भाषा, जो हम नित्य-प्रति के जीवन में बोलते हैं। चेतन-अचेतन रूप से जिन्हें हम संप्रेषणीयता और बोध-तत्त्व के माध्यम बनाते हैं। इस तरह ये प्रतीक हमारी अभिव्यक्ति के जीवन्त आधार हैं—अतः हमारे व्यक्तित्व के अंग हैं, जैसे स्वप्न अंग है।

और नाटक में प्रतीक का धर्म केवल यह है कि वह समवेद्य बात को, तथ्य को शब्दों की अपेक्षा कहीं अधिक सीधे और शक्तिशाली ढंग तथा सुन्दर रूप से प्रस्तुत कर सकता है।

इस तरह 'मादा कैक्टस' का प्रतीक, प्रतीक-योजना के फैशन के लिए नहीं है—प्रतीक महज प्रतीक के लिए, इसे मैं खोखली, बेमानी धाक जमाने की बात मानता हूं।

यह नाटक, जैसे अपने-आपको मुझसे लिखा ले गया—अपनी मौलिक भाषा में, शिल्प में और स्वर-संगति में। शायद तभी इसमें ये प्रतीक आ गए—नाटक में नाटक की परम शुद्ध भाषा।

मैं अपने उस मन-चित्त और प्रेरणा के प्रति कृतज्ञ हूं, जिसने मुझे अपनी भाषा और स्वर-लहरी भी दी, तभी यह नाटक अपनी गठन में इतना कसा हुआ आया, जैसे सुधीर की कसी हुई मुट्ठी; मुट्ठी अगर इतनी कसी न होती, तो निश्चय ही मुट्ठी की चीज़ बिखर जाती।

मैं अपने इस नाटक से संतुष्ट हूं, क्योंकि मुझे विश्वास है कि आप मेरे संग सोचेंगे। जो मैंने देखा है, उसे आप ढूंढेंगे। नीलाम का बाजा बजा-बजाकर मैंने अपनी मुट्ठी की चीज़ नीलाम कर देनी चाही है; अधिक दिनों तक मैं उसे अपने संग नहीं रख सकता था :

नवयौवन कोमल जिया
चिन्ता सही न जाय
ताते पत्थर का दिया
क्षार-क्षार ह्वै जाय।

उस चीज़ का नाम सुधीर ने आप ही से पूछा है। बड़ी मिन्नतें की हैं उसने आपसे, यहां तक कि उसने आपको डराया-धमकाया भी है।

इसीलिए सुधीर आपके सामने नाटक का उद्‌घोषक भी है। उसने नहीं चाहा है कि आप उसके नाटक को मात्र देखें ही, बल्कि उसने चाहा है कि आप उसके नाटक के अंग बनकर रहें। नाटक की सजीव भूमिका में रहें। रंगमंच और दर्शक के बीच में चलचित्र ने जो व्यवधान उपस्थित कर रखा है, उसको उसने भर देना चाहा है, वह पुल है आपका और रंगमंच का।

नाटक में उसने एक तीव्र गति चाही है, क्योंकि वह शिकारी है, उसने किसी को शिकार होते हुए देखा है। उसके हाथ बन्दूक और पिस्तौल के अभ्यासी हैं, छड़ी और रूमाल के नहीं। उसने मुझे प्रथम और द्वितीय अंक के बीच में तीसरे अंक की स्थापना नहीं करने दी। उसके पास जैसे ज़रा भी रुकने की फुरसत नहीं थी।

मुझे डर है, मैं इस तरह लिखते-लिखते नाटक की उस पहेली को

कहीं छेड़ने न लगूं, जो सुधीर की है। उसे सुधीर ही आपसे पूछेगा, किसी स्त्री का स्वर उसे जवाब देने दौड़ेगा; वह उसे मना कर देगा। क्योंकि वह तो आपसे उत्तर मांग रहा है। वह पहेली आपकी है, मेरी है, उनकी है जो अमीर खुसरो की तरह यह पहेली छेड़ गए हैं :

जब काटो तब डहडहे
बिन काटे कुम्हिलाय।
ऐसी अद्भुत नार का
अन्त न पायो जाय ॥

लक्ष्मीनारायण लाल

मादा कैक्टस का पहला प्रस्तुतीकरण ६ नवम्बर, १९५६ को आकाशवाणी रंगमंच, इलाहाबाद के तत्त्वावधान में ऑफ़िसर्स ट्रेनिंग स्कूल के रंगमंच पर हुआ।

आनन्दा[1] : सादिक़ा सरन
अरविंद : अनिलकुमार मुकर्जी
सुजाता : हीरा चड्ढा
सुधीर : राज जोशी
दद्दाजी : पी० सी० बनर्जी
डाक्टर पापा : जे० के० बनर्जी
गंगाराम : भोलानाथ मधुर

•

निर्देशक : **डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल**
मंचसज्जा : **के० बी० चंद्रा**
संगीत-रचना : **शंकरलाल मिश्र**
प्रकाश : **दरबारी**
रूप-विन्यास : **राबिन बनर्जी**

---

१. आनन्दा ने अपना नाम बदलकर न जाने क्यों अब मीनाक्षी कर लिया है और तब की सुजाता अब फ्लैशबैक में न आकर प्रत्यक्ष आती है और अब किसी के सामने नहीं रोती। क्यों ? और अब डाक्टर पापा भी नहीं आते, कहते हैं अनावश्यक है।

चरित्र

•

सुधीर

अरविंद

मीनाक्षी

सुजाता

गंगाराम

दद्दा

इलाहाबाद के प्रथम प्रस्तुतीकरण में मीनाक्षी (ग्रानन्दा) की भूमिका में
प्रसिद्ध ग्रभिनेत्री श्रीमती साविका सदव

पहला ग्रंक

•

[खुले मंच पर ग्रभी उतना प्रकाश नहीं ग्राया है, फिर भी पीछे मीनाक्षी ग्रौर सुजाता मूर्तिवत् खड़ी दिख रही हैं। न जाने किधर से, बड़ी मस्ती में सुधीर ग्राता है। दाएं कंधे पर कैमरा, बाएं पर वाइनाकुलर लटक रहा है। मंच को पार करते-करते उसकी नज़र दर्शकों पर जाती है ग्रौर वह ग्राश्चर्यचकित घूमता है।]

सुधीर : ग्रंय! यह बात क्या है? (वाइनाकुलर से देखता है।) इतने लोग यहां बैठे हैं—चुपचाप …केवल मुझ पर रोशनी…बाकी सब ग्रंधेरे में। ताज्जुब है! यह रोशनी वहां तक क्यों नहीं चली जाती? लोग इस तरह ग्रंधेरे में क्यों बैठे हैं?…इतने शान्त ग्रौर ख़ामोश!

[इसी क्षण पृष्ठभूमि से नीलामी का बाजा बजने लगता है।]

सुधीर : यह क्या? ग्ररे…! यह बाजा तो कह रहा

है, यहां कुछ नीलाम होने जा रहा है। अच्छा, तो यह बात है···ये बोली बोलने वाले लोग बैठे हैं···जैराम जी की···नमस्ते···ही ही ही ही···ओह, आप भी आये हैं···बड़ी खुशी की बात है··और क्या हाल-चाल है ?···जी, मुझे पता नहीं था···मैं तो इधर से जा रहा था··· (सहसा) जी, मेरा नाम ? आप मुझे नहीं-जानते···? मेरा नाम ?···ताज्जुब है···नहीं नहीं, मेरा नाम 'ताज्जुब' नहीं, सुधीर है सुधीर। मगर लोग मुझे अब तक 'बेबी' कहते हैं।···जी हां, देखिए न लोगों की शरारत··· मुझे खामखाह छेड़ते हैं···'टीन एजर, 'प्रॉब्लम बॉय'···जबकि मेरी उमर इतनी कम नहीं-है··जी हां, जनाब। अजी, आप हंसते क्यों हैं ? ऐसी भी क्या बात है ! कहीं मुझमें कुछ गड़बड़ी है क्या ? मेरा पहनावा···आल राइट···! मेरी मुट्ठी में ? ओह, मैंने तो ख़याल ही नहीं किया, थैंक्यू···पर मेरी यह मुट्ठी जन्म से बन्द नहीं है। आप वह किस्सा जानते हैं···एक था चोर, बड़ा नामी चोर। और उसकी पत्नी भी गिरहकट थी। खूब कमाई थी दोनों की। चोर की औरत को पहला बच्चा होनेवाला था। दोनों बड़े खुश। भगवान के मन्दिर में गये। भगवान के सामने

हाथ जोड़कर बोले—हे भगवान, हमने तै किया है कि आगे से हम अब चोरी-बेइमानी नहीं करेंगे। बाल-बच्चों पर इसका बुरा असर पड़ता है। खानदान की बदनामी होती है··· क्यों जी, ठीक कह रहा हूं न ! हां तो, हुआ यह कि उन्हें बच्चा हुआ···मेरा मतलब चोर की औरत को बच्चा हुआ··पुत्र···। बड़ा जशन मनाया गया। पर यह क्या··इसी तरह उस बच्चे की मुट्ठी बंधी थी। लोग बड़े परेशान, किसी सूरत से बच्चे की मुट्ठी खुले ही न ! तै पाया गया कि मुट्ठी का आपरेशन हो ! अस्पताल में भी एक डाक्टर था गिरह-कट, उसे बच्चे पर दया आ गयी। उसने अपनी घड़ी उतारी और घड़ी को बन्द मुट्ठी के ऊपर हिलाने लगा। बच्चे ने मुट्ठी खोलकर घड़ी पकड़नी चाही·· लोगों ने देखा उसकी हथेली पर एक अंगूठी। नर्स चिल्लायी—— 'हाय, मेरी अंगूठी !'···तो उस तरह मेरी यह मुट्ठी नहीं बन्द है। अगरचे इसमें भी एक चीज है 'आई एम सॉरो' चीज़, अब बताइये, क्या है मेरी मुट्ठी में ? बताइए··बताइए···मैंने आपको बन्द मुट्ठी की एक कहानी भी सुना दी, फिर भी आप लोग···अजी, आप इसे मज़ाक समझते हैं···लानत है मेरी शक्ल-सूरत

पर ! भइया, आप हंसते क्यों हैं ?···हां तो हाज़रीन, क्या है मेरी मुट्ठी में ?···झट बोलिये, नहीं तो आप सबकी तसवीर खींच लूंगा और छपवा दूंगा अखबार में कि देखिये इन लोगों को···हां-हां, समझते क्या हैं मुझे ! मैं इतना बेमतलब का नहीं हूं···'आई हैव ए मीनिंग' ··देखिए, मुझे खुद यह कहना पड़ रहा है···बुरी बात है न !···बताइए, क्या है मेरी इस मुट्ठी में ? कोई नहीं · कोई नहीं··· कोई नहीं तो जाइए, फिर मैं अपनी मुट्ठी की चीज़ नीलाम किये दे रहा हूं···जी हां, फिर मत कहिएगा·· कोई नहीं एक, कोई नहीं दो, कोई नहीं···!

[सहसा पीछे खड़ी मीनाक्षी जैसे जी उठती है।]

मीनाक्षी : मैं बताती हूं !

सुधीर : तुम···कौन···कौन हो तुम ?

मीनाक्षी : तुम्हारे नायक अरविंद की प्रेमिका···मीनाक्षी। नहीं, उनकी एक समानान्तर रेखा···साथ-साथ चलने वाली, पर उतनी ही दूर, खिंची हुई। मैं जितना ही पास आने को तड़पती थी, उतना ही मैं कहीं सूख जाती···यह जो तुम्हारे हाथ में है···।

सुधीर : नहीं-नहीं···तुम नहीं···।

सुजाता : मैं बताती हूं···मैं हूं तुम्हारे नायक अरविंद की परित्यक्ता धर्मपत्नी···सुजाता··। वह कलाकार · मैं केवल स्त्री। उनकी चित्रकला का पिरामिड ऊंचे से ऊंचा उठता चला गया, और मैं उसके नीचे, और नीचे दबती चली गयी। यह जो तुम्हारी मुट्ठी में है···।

सुधीर : नहीं···नहीं···नहीं !

मीनाक्षी : प्रेमिका कला की प्रेरणा देती है, पर उसका सम्पर्क···?

सुजाता : स्त्री शोभा है, पर धर्मपत्नी !·· दूर, छूना नहीं, तेरा स्पर्श मेरी नसों के भीतर खून को सुखा देता है !

सुधीर : बस-बस ! तुम दोनों जाओ यहां से। मुझे क्या पता तुम सब चारों ओर हो ! जाओ···। (वे दोनों अदृश्य होती हैं।) ठीक···हां तो हाजरीन ! मेरी मुट्ठी में जो चीज़ है, उसमें सब कांटे ही कांटे हैं। कांटों के भीतर एक फूल है। एक हसीन फूल, जो स्वप्न देखता है कि उसमें फल आये। मगर उसके पास एक कीड़ा आ बैठा है···।

[दृश्य पर प्रकाश आता है। अरविंद के बंगले का बरामदा। कलात्मक मेज-कुर्सियां···दो-एक मोढ़े भी। एक ओर टेलीफोन। दूसरी ओर नीची-सी टेबुल पर पत्र-पत्रिकाएं। सामने एक ऊंचे आधार पर कैक्टस के तीन खूबसूरत गमले अलग-अलग सजाकर रखे हुए हैं।

दीवार पर अरविंद के बनाये हुए दो तैलचित्र लगे हैं। जाड़े के दिन हैं। सुबह के नौ बज रहे हैं। अरविंद गाउन पहने फोन पर कह रहे हैं :]

अरविंद : जी हां, सुन्दरता सुन्दरता के ही लिए है। यह सच है, ईश्वर है, और न जाने क्या-क्या है—इसे मैं नहीं मानता···यह जो है, बस उतना ही है।···जी, मेरा विश्वास है—यहां के लोग बहुत गलत ढंग से सोचते रहे हैं···जिस चीज़ की तारीफ करते हैं, उसे सब कुछ कह डालते है, और वह बुनियादी चीज़ ध्यान से हट जाती है···ओह, आप कितना अच्छा हंसती हैं !··· तुम···नहीं-नहीं, आप···।

[मुसकराते हुए फोन रखना। उस दिन का अखबार पढ़ना। कैक्टस के पौधों को देखना। भीतर से गंगाराम का प्रवेश]

गंगाराम : चाय यहीं ले आऊं ?

अरविंद : आता हूं···पिताजी कहां हैं ?

गंगाराम : टहलकर नहीं लौटे !

[विराम। गंगाराम भीतर जाता है। थोड़ी देर बाद अरविंद भी अन्दर जाते हैं। सूने मंच पर दायीं ओर से आंधी की तरह सुधीर आता है।]

सुधीर : गंगाराम !···ओ बे गंगाराम के बच्चे !

आवाज़ : जी आया, सरकार !

[सुधीर कैक्टस के तीनों गमलों को एक-दूसरे से सटा देता है। इससे जो जगह निकलती है, वहां वह अपना कैमरा-वाइनाकुलर रख देता है।]

सुधीर : (कुर्सी पर बैठता हुआ) अबे, जल्दी चलो यहां, वरना टेलीफोन करना पड़ेगा !

[गंगाराम आता है।]

गंगाराम : नमस्ते साहब !

सुधीर : यह हाथ क्या जोड़ता रहता है !

गंगाराम : अच्छा साहब···!

सुधीर : यह साहब साहब क्या है ?

गंगाराम : अच्छा अच्छा अच्छा !

सुधीर : सावधान !···कॉफी पिलाओ पहले···ज़रा आज पिकनिक के मूड में हूं ! जाओ, खड़े मुंह क्या देख रहे हो !

गंगाराम : कुर्सी टूट जायगी साहब···ज़रा कायदे से··· पैर नीचे साहब···इधर की तरफ···उधर नहीं, इधर, नीचे···

सुधीर : मतलब मैं खड़ा हो जाऊं ! ले, तेरी भी मंशा पूरी हो !

गंगाराम : नहीं नहीं नहीं···बैठिये···बैठिये ! सच, आप तो बिलकुल बेबी ही रह जायेंगे साहब। माता जी ने बहुत समझ-बूझकर आपका नाम···

सुधीर : अरे रे रे, आज तो अखबार भी नहीं देखा। (उठकर अखबार लेना) ऐं है···क्या-क्या खबरें छपती हैं !···कुएं में से एक युवती की लाश

बरामद···होटल के कमरे में पति-पत्नी बेहोश···पत्नी ने आत्महत्या की···प्रेमी चकमा देकर भाग गया···प्रेमिका अनाथालय में··· कूड़ा अखबार ! (फेंकना) यह बताओ, कॉफी लाते हो या नहीं !

गंगाराम : चढ़ा के आया हूं, हुजूर !

सुधीर : वह तो देख रहा हूं···एक बोतल या दो ?

गंगाराम : छिः छिः, हुजूर ! ···राम राम राम···!

सुधीर : चढ़ाके आये हैं । लेके क्यों नहीं आये ? तेरी इसी आदत से तंग आकर हमने अपनी कोठी से हटाकर तुझे यहां ला पटका है !

गंगाराम : (अखबार को करीने से रखकर) यहां बड़े मजे में हूं सरकार··मैं तो कहता हूं आप भी आ जाइये···बड़े ठाठ से···।

सुधीर : चुप बे ! यहां भला कोई इन्सान रह सकता है···चारों ओर कांटे ही कांटे···न घर, न गृहस्थी !

गंगाराम : उसकी क्या जरूरत साहब···आप भी 'माडरन' होके···

[अन्दर चला जाता है । टेलीफोन आता है । गंगाराम उठाने को दौड़ता है। सुधीर उठा लेता है।]

गंगाराम : साहब···बात यह है कि···

सुधीर : अबे, यह मेरे लिए है···हेलो, जी हां, आवाज़ पहचानिये···नहीं पहचान सकीं न ! अच्छा मैं अब सुरीली आवाज़ में अपने आपको पेशे-खिदमत करता हूं··· (गाता है) बस·· मीनाक्षी दीदी, यह शरारत नहीं, फैक्ट है फैक्ट···एफ ए सी टी, फैक्ट । जी हां, जी, वह खड़ा है··मेरे सामने बिलकुल मुंह बाये खड़ा है···अब बन्द कर लिया मैं क्यों बुलाऊं ?

गंगाराम : साहब, मुझ पर डांट पड़ जायेगी···साहब, आपको बिलकुल भी···

सुधीर : नहीं पसंद करते, यही न···। 'केयर नॉट'··· हेलो दीदी, मेरी मुर्गाबी को जरा चारा डलवा दीजियेगा । और हां, उसके टैंक में पानी भी भरवा दीजिये··थैंक्यू ! अबे गंगाराम के बच्चे, अपने साहब को बुला···यह उन्हीं के लिए है !

[भीतर से अरविंद का प्रवेश]

अरविंद : ओहो···आप हैं !

गंगाराम : साहब, आपका फोन है ।

सुधीर : यह लीजिये, सम्भालिये !

अरविंद : (फोन पर) हेलो···जी हां, यहीं हैं···कोई बात नहीं ।(फोन से अलग) गंगाराम, कॉफी यहीं ले आओ ।(गंगाराम भीतर जाता है ।)आप बैठिये । ···मीनाक्षी जी, देखिये आपके सुधीर भाई कुर्सी पर नहीं बैठते ! (हंसना) तुम्हारी दीदी कह रही हैं, 'सुधीर अदब करता है'···

सुधीर : सुधीर और अदब ! अजी, तौबा कीजिये। (जोर से) मीनाक्षी दीदी, यहां मच्छर बहुत हैं···आपका बुखार बढ़ जायगा···!

अरविंद : प्लीज···!

सुधीर : प्लीज !

[अरविंद फोन रखते हैं। गंगाराम कॉफी ले आता है। दोनों लेते हैं। गंगाराम चला जाता है।]

अरविंद : 'मीनाक्षी जी का बुखार बढ़ जायेगा'···क्या मतलब ?

सुधीर : बुखार माने 'फीवर'···फी···फी···फ···!

अरविंद : प्लीज···!

सुधीर : 'एण्ड फीवर मीन्स नथिंग !' आपने पिछले दिनों हमारे घर देखा था न, एक मादा तोता··· आई एम सारी, मादा तोती।

अरविंद : क्या हुआ ?

सुधीर : टांय टांय फिस्स···वह मर गयी। यह औरत जात भी खूब है, सिर्फ मरना जानती है।

अरविंद : आपको औरत जात के बारे में क्या पता ?

सुधीर : मैं इत्ता बड़ा मुर्गाबी परिन्दा फंसा के लाया हूं···किसी को देखने नहीं देता। बात यह है कि हर परिन्दा गरीब होता है···क्योंकि वह उड़ता है···इतना ही नहीं, वह अण्डे भी देता है···इसीलिए वह इतना खूबसूरत और लाजवाब है।

अरविंद : मीनाक्षी की तबीयत खराब है, उन्होंने मुझे···!

सुधीर : मीनाक्षी नहीं, मीनाक्षी जी !

अरविंद : मुझे किसी ने नहीं बताया !

सुधीर : चलिये मेरे संग पिकनिक पर। आपके हाथ में कैमरा, मेरे हाथ में बन्दूक !

अरविंद : (चुप हैं।)

सुधीर : अच्छा, आप पेंटिंग कीजियेगा, मैं करूंगा फायर। ठायं···ठायं···!

[बाहर से दद्दा जी का प्रवेश]

सुधीर : नमस्ते, दद्दा जी !

दद्दा : खुश रहो··बैठो, खड़े क्यों हो ?

सुधीर : दद्दा जी, मैं राजा बेटा हूं न, बड़ों का अदब करता हूं। दद्दा जी, आपके बदन पर यह शेरवानी खूब जंचती है··अहा हा !

दद्दा : आपको पता है, मीनाक्षी बेटी को अकसर टेम्प्रेचर रहता है ?

सुधीर : दद्दाजी, आजकल मौसम बढ़िया है··शराबी ···शराबी···!

अरविंद : आप वहीं से आ रहे हैं क्या ?

दद्दा : मीना के पापा ने बुलाया था।

सुधीर : दुनिया के सारे पापा लोगों की यही हालत है !

अरविंद : सुबह-सुबह वहां इस तरह जाने की क्या जरूरत थी ? अभी कुछ देर पहले मीनाक्षी

जी से मेरी फोन पर बात हुई है। कल शाम हम दोनों साथ थे।

दद्दा : परसों आप दोनों साथ-साथ उतनी रात तक चित्र बनाते रहे। उसे उसका चित्र बिलकुल नापसन्द था। उसने वह चित्र फाड़ डाला।

अरविंद : यह सब आपको कैसे मालूम ?

दद्दा : कैसे मालूम !

सुधीर : ऐसा हो जाता है, कोई खास बात नहीं है, क्यों ? (बाइनाकुलर में देखकर) वह दिखाई पड़ी चिड़िया ! हाय, क्या पंख हैं !

अरविंद : बुखार है, ठीक हो जायेगा, इसमें ऐसी क्या बात है।

सुधीर : जी हां, इसमें क्या बात है !···ओह, उड़ गई।

दद्दा : आपको कोई फैसला कर लेना चाहिए ! जवान लड़की का मामला है, कब तक कोई इन्तज़ार करे !

अरविंद : शादी-ब्याह के अलावा आप लोग और कोई बात नहीं कर सकते ?

सुधीर : आदत से मजबूर !

दद्दा : यह बात मीना के पापा जी से कहिए !

अरविंद : वह मीनाक्षी जी ने कहा है। वह पापा आपकी तरह नहीं हैं।

दद्दा : काश, यही सच होता !

सुधीर : दद्दाजी, आप फिल्म में पिता का रोल बहुत अच्छा कर सकते हैं।

दद्दा : खामोश !

सुधीर : (चुप हो जाने का अभिनय)

दद्दा : कुछ फैसले के लिए ही मीना के पापा ने मुझे यहां बुलाया है, वरना मैं यहां नहीं आता !

अरविंद : हम लोग कोई बच्चे हैं जो आप लोग इस तरह···

दद्दा : मीनाक्षी बच्ची है, यह उसके पापा ने कहा।

अरविंद : ये आपके खयालात हैं। (भीतर चले जाना)

सुधीर : छोड़िये भी, दद्दाजी ! लाइए, एक बीड़ी पिलाइये।···बड़ी डीलेक्स बीड़ी है दद्दाजी, कहां से मंगाते हैं ? नाम क्या है ?

दद्दा : तुम अभी लड़के हो·· तुम्हें क्या पता !

सुधीर : मैंने एक मुर्गाबी पाल रखी है। उसी का जोड़ा लगाने वाला हूं···तभी तो इतनी तलाश में रहता हूं। जिस दिन जोड़ा लग गया, फिर देखियेगा मुर्गाबी डांस···झाक झना झन झक झनाझन हइया···झक झनाझन हइया !

दद्दा : ओ हो, छोड़ो भी अब यह नादानी !

सुधीर : गंगाराम, पिला एक गिलास पानी !

दद्दा : बैठो, मैं जरा ये कपड़े बदल आऊं !

[दद्दा भीतर जाते हैं। सुधीर कुर्सी पर बैठकर बाइनाकुलर से देखता है। भीतर से पानी लिये गंगाराम का प्रवेश।]

सुधीर : यह क्या सूरत बना रखी है रे ?

गंगाराम : बहुत दिन हुए घरवाली का कोई खत नहीं आया !

सुधीर : इधर आ···और पास···कान इधर कर, वह तेरे हाथ से गयी !

गंगाराम : ऐसी 'टाक' क्यों करते हो जी ।

सुधीर : वाह बेटा, 'टाक'···'टाक'···औरत से इतनी दूर रहेगा, तो क्या होगा ?

गंगाराम : क्या करूं, साहब जी छुट्टी नहीं देते !

सुधीर : भाग क्यों नहीं जाता ?

गंगाराम : भाग क्यों नहीं जाता !

सुधीर : उसे ही यहां बुला ले···यहां कितनी जगह तो पड़ी है ।

गंगाराम : यह बंगला और औरत ! अजी, भगवान का नाम लीजिये !

सुधीर : तू ले भगवान का नाम, और कहीं डूबकर मर जा !

गंगाराम : फिर वही 'टाक'! कान खोलकर सुन लीजिये··· हां, जिस तरह हमारे साहब हर चीज़ की आतमा पूजते हैं न, मैं भी उसी तरह इस शरीर को नहीं मानता !

सुधीर : तभी बंगले भर में चारों ओर कंक्टस ही कैक्टस हैं । पता नहीं दद्दाजी यहां कैसे सांस लेते हैं ।

गंगाराम : हमारे साहब कहते हैं, मैं खुद कैक्टस हूं । पिछले दिनों एक पौधा सूख गया, साहब ने दो दिनों तक खाना नहीं खाया !

सुधीर : अरे, मुझे बताते, मैं ट्रक के ट्रक कैक्टस लदवाकर यहां पाट देता बे !

[फोन की घंटी बजती है । सुधीर उठाता है । भीतर से दद्दा आते हैं ।]

सुधीर : जी···जी हां·· क्यों नहीं···क्यों नहीं !

गंगाराम : किसका फोन है, साहब ?

सुधीर : कोई साहब अरविंद जी से मिलना चाहते हैं । बहुत दूर से दर्शन के लिए आये हैं ।

गंगाराम : (फोन पर) देखिये जी, अभी साहब यहां हैं नहीं । जी, जी···जी हां, उन्हें पता नहीं था । (फोन रखता है ।)

दद्दा : अबे नौकर की दुम, इतना झूठ क्यों बोलते है ?

सुधीर : ट्रेण्ड हो गया है ··

दद्दा : तेरे साहब के पास अगर वक्त नहीं है, किसी से मिलने का जी नहीं है, तो लोगों से साफ क्यों नहीं कह देते ? यहां झूठ का इतना बड़ा व्यापार क्यों चलता है ? (सन्नाटा) कहां हैं तेरे साहब ?

गंगाराम : पूजा कर रहे हैं ।

सुधीर : ऐं, पूजा ! कैक्टस और पूजा ! ही ही ही ही···

दद्दा : अजी, कोई रामनाम की पूजा···'मेडीटेशन'···

[गंगाराम अन्दर जाता है।]

सुधीर : चलिये, आपको पिकनिक पर ले चलूं !

दद्दा . तुम्हें पता है, मैं यहां तुम्हारे पापा के बुलाने से आया हूं। तुम्हारी यह जो बड़ी बहन मीनाक्षी है न···

सुधीर : (भागता है) वह मारा !

दद्दा : अरे कहां ?

सुधीर : एक चिड़िया···चिड़िया···अभी आया !

(बाहर भाग जाता है।)

दद्दा : पत्नी से नफरत···ब्याह कला को सुखाता है··· सुजाता जैसी बहू का वह अपमान ! कला के लिए प्रेम चाहिए···प्रेम माने मीनाक्षी·· और मीनाक्षी माने क्या ? पूछने पर लाल-पीले होते हैं···सब खेल समझ रखा है। सुजाता को डाइवोर्स दिया···वह कुछ बोली तक नहीं··· चुपचाप चली गयी। इनका खयाल है अब मीनाक्षी भी चुपचाप···

[अरविंद का प्रवेश]

अरविंद : सुधीर कहां है ?

दद्दा : कहीं भागकर गया है !

अरविंद : क्या बात है···आज आप कुछ ज़रूरत से ज्यादा···

दद्दा : आपको क्या परवाह !

अरविंद : फिर छोड़िये ?

दद्दा : छोड़ना तुम्हारा स्वभाव है। सुजाता बहू की चोट अब तक मेरे माथे पर है। वह शादी मैंने तय की थी, और उसमें तुमने जो कुछ किया, उसके लिए मैं अपने आपको जिम्मेदार पाता हूं। अब मीनाक्षी तुम्हारी अपनी निजी खोज है।

अरविंद : है, तो ?

दद्दा : वह बाहर-भीतर से सुन्दर भी है।

अरविंद : यह कोई कहने की बात है।

दद्दा : वह फ्रेन्ड है···कम्पैनियन···।

अरविंद : जी।

दद्दा : और अब इसके आगे ?

अरविंद : (चुप)

दद्दा : उसे टेम्प्रेचर रहने लगा है और तुम इधर अकेले 'मेडीटेशन' करने लगे हो।

[पृष्ठभूमि में बन्दूक का फायर]

अरविंद : यह क्या ? मेरे अहाते में यह किसकी हिम्मत। ···गंगाराम···देखो, कौन है यह बन्दूक चलाने वाला···पकड़ लाओ !

[गंगाराम आकर जाता है।]

अरविंद : लगता है, यह सुधीर साहब हैं।

दद्दा : वह तो महज़ बाइनाकुलर लेकर गया है।

अरविंद : ओह, कई लोग हैं वहां ! मिस कपूर भी हैं।

तभी मिस्टर पिकनिक का मूड लिये यहां जमे बैठे थे । यह ज़रूर सब पहले से तय था ।

[गंगाराम के संग सुधीर का प्रवेश]

अरविंद : यहां किसने फायर किया ?

सुधीर : दी सुधीर ने !

[गंगाराम भीतर जाता है ।]

अरविंद : आपको पता है···।

सुधीर : यहां बन्दूक चलाना मना है···पर चिड़िया सुन्दर थी ।

अरविंद : तो आप सुन्दर पर गोली चलाते हैं ?

सुधीर : कौन नहीं चलाता ? हां, तरीके अलग-अलग ज़रूर होते हैं···कोई जाल में फंसाकर मारता है, कोई···

अरविंद : बेकार की बातें बंद करो ।

सुधीर : मैं भी यही चाहता हूं···पर मेरी उम्र कम है, थोड़ा शरीफ भी हूं !

अरविंद : मतलब ?

सुधीर : शिकार लाजवाब था ।

अरविंद : वह चिड़िया थी ।

सुधीर : बेचारी एक ही छर्रे में मर गयी ।

अरविंद : फिर क्या गाना गाती ?

सुधीर : क़ायदे से गाना चाहिए था उसे । वह मेरी बन्दूक चलाने की कला को कुछ तो प्रेरणा देती !

अरविंद : नॉनसेन्स !

सुधीर : (हंसता है) ना न से न्स···! देखिये न, मेरे पास बन्दूक नहीं, बाइनाकुलर है । इत्तिफ़ाक से मैं वही चिड़िया देख रहा था, जिसे वह देख रही थीं । और उनके पिता जी के हाथ में बन्दूक। पर वह बन्दूक चलाने से डर रहे थे···यानी आप से डर रहे थे ।

अरविंद : फिर आपने बन्दूक लेकर चला दी ।

सुधीर : और क्या करता···शिकार, शिकारी और बन्दूक सब एक प्वाइंट पर थे ।

अरविंद : यही पिकनिक थी आपकी ?

सुधीर : जी नहीं, अभी तो पिकनिक शुरू हुई है··· टा टा···!

[तेज़ी से चला जाता है ।]

दद्दा : कुछ भी हो, सुधीर मर्द आदमी है । लगता है कि कुछ है । एक्शन···एक्शन···।

सुधीर : आपके लिए चिड़ियों पर बन्दूक चलाना ही बड़ी मर्दानगी है ।

दद्दा : कम से कम निशानी तो है ।

[अन्दर जाते हैं । अरविंद की नज़र कैक्टस के पौधों की ओर जाती है ।]

अरविंद : यह कैसे हुआ ? ये कैक्टस के पौधे इस तरह मिल कैसे गये ?···गंगाराम !

गंगाराम : (आकर) जी ?

अरविंद : यह देखो ! यह क्या है ? यह किसने किया ?

गंगाराम : सुधीर बाबू ने इन्हें मिला दिया ! यहीं उन्होंने अपना कैमरा वगैरह रखा था ।

अरविंद : और तुम यहां किस लिए हो ? तुम्हें कितनी बार बताया है कि यह बीच का पौधा मादा कैक्टस है । ये दोनों नर कैक्टस हैं । ये मादा कैक्टस इनके लिए खतरनाक हैं । ये आपस में मिले नहीं कि ये नर कैक्टस सूख जायेंगे । तुम्हें पता है इस तरह कई पौधे अब तक सूख चुके हैं ।

[भीतर से पिता आकर चुपचाप खड़े रह जाते हैं ।]

गंगाराम : जब यह इतनी खतरनाक है, तो इसे रखते ही क्यों हैं ?

अरविंद : यह उतनी ही खूबसूरत है । बिना इसके मैं एक क्षण नहीं रह सकता । यह मेरी···

[प्यार से पौधे को उठा लेता है ।]

गंगाराम : इसमें कांटे बहुत हैं साहब !

अरविंद : ये कांटे नहीं, फूल हैं···वह भी अपनी रक्षा के लिए । सारा सौन्दर्य और रस तो इसके भीतर है ।

दद्दा : पर आप तो कहते थे, कैक्टस को सुखानेवाली कोई चीज़ ही नहीं होती । आपने तो इनके कई चित्र बनाये हैं ।

अरविंद : जी, नये इन्सान का प्रतीक है यह कैक्टस । आज की अन्तर्विरोधी परिस्थितियों में भी यह हरा-भरा रहता है । कोई जानवर नहीं, कोई कीड़ा नहीं, कोई बीमारी नहीं जो इसे सुखा सके ।

दद्दा : वाह रे वाह !

अरविंद : मार्क्स और अरविंद का समन्वय है इस पौधे में···बाहर कांटे, भीतर रस !

दद्दा : यानी ये पौधे नहीं, फिलॉसफर हैं ।

अरविंद : बेशक !

दद्दा : पर ये फिलॉसफर-बहादुर पौधे सिर्फ एक ही वजह से सूखते हैं—मादा कैक्टस के सम्पर्क मात्र से । (हंसते हैं ।) भई, एक छुई-मुई का पौधा सुना था···वाह···वाह-वाह···!

अरविंद : आप लोगों की ज़िन्दगी केवल सुन-सुनाकर ही तो कटी है, पर हमारी ज़िन्दगी और है ।

दद्दा : गंगाराम, तू भीतर जा !

[गंगाराम जाता है ।]

दद्दा : आप और ज़िन्दगी ! आप सिर्फ़ ज़िन्दगी की बात कर सकते हैं । क्योंकि आप उससे भागने वाले लोग हैं । आपको जिम्मेदारी नहीं, केवल अधिकार चाहिए··· मज़े, केवल मज़े ।

अरविंद : पिताजी !

दद्दा : अपने पक्ष को मज़बूत बनाने में आप कोई

भी तर्क खड़ा कर सकते हैं ।

अरविंद : पिताजी !

दद्दा : अपने को बड़ा, न्यायवान, तर्कसंगत साबित करने के लिए अपनी एक नयी भाषा तक गढ़ लेते हैं । आखिर यह कैक्टस और है क्या ?

अरविंद : यानी यह सब झूठ है ?

दद्दा : उस ज़िन्दगी के बिना यह सब झूठ है ।

अरविंद : कैसी ज़िन्दगी ?

दद्दा : मुझे बताना पड़ेगा ?

अरविंद : जी ।

दद्दा : सुजाता एक ज़िन्दगी···मीनाक्षी दूसरी ज़िन्दगी और सच एक ज़िन्दगी ! जिसे पहले सम्पूर्ण रूप से ग्रहण किया जाता है ।

अरविंद : जैसे आपने ग्रहण किया···मेरी मां के मरने के बाद लगातार दो शादियां करके !

दद्दा : हां, शादियां करके ! चोरी करके नहीं···!

अरविंद : यह आप ही कह सकते हैं !

दद्दा : मेरे लिए ज़िन्दगी छुई-मुई का पौधा नहीं है ।

अरविंद : चुप रहिए !

दद्दा : मैं आपकी तरह खूबसूरत भाषा नहीं गढ़ सकता···मैं आपकी तरह कलाकार नहीं । (सहसा) ओह, मीनाक्षी बेटी, तुम वहां क्यों खड़ी हो ! आ जाओ, आओ···!

[मीनाक्षी का प्रवेश]

अरविंद : मैं बस, अभी आपके पास आनेवाला था ।

मीनाक्षी : तो वापस चली जाऊं क्या ?

दद्दा : (हंसते हैं) बहुत अच्छा जवाब दिया···यह है ज़िन्दगी !

अरविंद : अब आपसे माफी चाहूंगा ?

दद्दा : भई, जा रहा हूं, यही न ?

मीनाक्षी : रुकिये, दद्दा जी !

दद्दा : आप लोग आर्ट्स की बातें कीजिये । मैं कॉफी बनवाता हूं ।

मीनाक्षी : जी नहीं !

दद्दा : यह देखिये, टेम्प्रेचर है न ?

मीनाक्षी : नहीं तो ?

दद्दा : थर्मामीटर ले आऊं ?

मीनाक्षी : मेरा यह हाथ इतना गरम रहता ही है ।

दद्दा : कब से ?

मीनाक्षी : यह तो पता नहीं ।

दद्दा : क्यों ?

[दोनों हंसते हैं । मीनाक्षी को सूखी खांसी आती है ।]

दद्दा : खांसी भी है न ?

मीनाक्षी : यह तो यूं ही ।

दद्दा : सब यूं ही ! गंगाराम···ज़रा थर्मामीटर तो ले आना ।

मीनाक्षी : क्या मैं बीमार लगती हूं ?

दद्दा : इसका उत्तर आप (अरविंद से) दीजिये !

अरविंद : नहीं तो, आप बिलकुल बीमार नहीं लगतीं ।

[गंगाराम थर्मामीटर ले आता है ।]

गंगाराम : यह लीजिये !

अरविंद : गंगाराम, तू भी मूर्ख है !

दद्दा : यानी मैं तो मूर्ख था ही !

[दोनों हंसते हैं ।]

दद्दा : लो, मुंह खोलो !

मीनाक्षी : दद्दा जी, आप मज़ाक करते हैं ।

दद्दा : और कर ही क्या सकता हूं ।

अरविंद : आज पिता जी अपने पूरे 'फार्म' में हैं ।

दद्दा : यही मैं चाहता हूं, तुम्हें कभी पूरे 'फार्म' में देखना । पर तुम हो कि खुलकर हंसते तक नहीं ।

अरविंद : आपसे क्या बात की जाय, आप तो हरदम उपदेश देते हैं ।

दद्दा : शाबाश ! जरा रीडिंग तो देखूं !···अरे··· ओहो, यह नॉर्मल कैसे है ? बेटी, तुमने ठीक से लगाया ही नहीं !

अरविंद : क्यों ? क्या यह ज़रूरी है कि इन्हें टेम्प्रेचर हो ही !

दद्दा : ओहो ! कैसी अशुभ बातें करते हो ? टेम्प्रेचर आप दोनों के दुश्मनों के हो ।···देखो, चुपके से चली न जाना, हां !

[गंगाराम के साथ भीतर प्रस्थान]

अरविंद : सच, आपकी तबीयत कुछ खराब है क्या ?

मीनाक्षी : पता नहीं !···ओह, यह कैक्टस कितना प्यारा है !

अरविंद : प्यारा नहीं, प्यारी ! यह मादा कैक्टस है !

मीनाक्षी : ओह, चमत्कार ! रियली ब्यूटीफुल !

अरविंद : आप लोग अपनी प्रशंसा करने में चूकती नहीं ।

मीनाक्षी : लगता है, यह जैसे कोई नन्हा-सा बच्चा हो । जी होता है इसे लाल-लाल कपड़े पहनाऊं !

अरविंद : आपकी उस पेंटिंग का क्या हुआ ?

मीनाक्षी : कौन-सी ?

अरविंद : वही भागता हुआ सफेद घोड़ा !

मीनाक्षी : मुझे वह आइडिया पसन्द नहीं है !

अरविंद : वह आइडिया मेरा था इसलिए ?

मीनाक्षी : नहीं । भागता हुआ···वह भी घोड़ा···वह भी सफेद·· कुछ समझ नहीं सकी !

अरविंद : फिर आप कब तक बच्चों की तसवीर बनाती रहेंगी ?

मीनाक्षी : जब तक मैं वही अनुभव करती रहूंगी !

अरविंद : वह आपका अनुभव नहीं, कल्पना है ।

मीनाक्षी : कल्पना अनुभव से कुछ कम है क्या ?

अरविंद : शायद ··!

मीनाक्षी : मेरे लिए वह कल्पना ही नहीं, स्वप्न है···

बल्कि मेरे लिए वह विवशता है।

अरविंद : मैं समझता हूं, आप पहले आर्टिस्ट हैं, फिर स्त्री।

मीनाक्षी : पहले मैं स्त्री हूं, और बाद में भी वहीं हूं ! वही एक ···।

अरविंद : यानी मैं पुरुष नहीं।

मीनाक्षी : पता नहीं !

अरविंद : क्या ?

[सन्नाटा और विराम]

मीनाक्षी : आप मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं ?

अरविंद : कारण आप हैं !

मीनाक्षी : मैं ?

[विराम]

अरविंद : मेरी कामना है कि आप एक श्रेष्ठ चित्रकार के रूप में···

मीनाक्षी : मेरी कामना यह नहीं है ! और कामना करने से ही क्या होता है ?

अरविंद : क्यों नहीं ?

मीनाक्षी : मैं सोचती हूं, हर सृजन के लिए बुनियादी चीज़ 'पैशन' है। और यह 'पैशन' ज़िन्दगी के भीतर से पैदा होती है, उसकी सिर्फ़ बात करते रहने से नहीं।

अरविंद : मुझमें वह 'पैशन' नहीं है ?

मीनाक्षी : पता नहीं !

अरविंद : आज आपकी भाषा बिलकुल बदल गयी है।

मीनाक्षी : इसके लिए बहुत दिनों से कोशिश कर रही थी। सुधीर ने एक मादा तोता पकड़ा था··· उसने फिर एक मुर्गाबी चिड़िया फंसायी···।

अरविंद : उस सुधीर की बातें करती हैं, जिसे न लाज है, न शर्म ! अभी उसने इस अहाते में अपनी गर्ल-फ्रेण्ड, मिस कपूर के लिए फायरिंग की··· वह भी एक चिड़िया पर !

मीनाक्षी : वह मिस कपूर से प्यार करता है।

अरविंद : उसके लिए मेरे अहाते में फायर ?

मीनाक्षी : वह पुरुष है।

अरविंद : पौरुष गरीब चिड़िया पर ?

मीनाक्षी : गरीब पर ही वह दिखाया जा सकता है !

[उसी क्षण पृष्ठभूमि में अनाथालय वालों का संगीत उठता है।]

दयालु नाम है तेरा पिता अब तो दया कीजै
हरी सब तुमको कहते हैं हमारे दुख हर लीजै।
बहुत भटका फिरा दर-दर शरण तज हे पिता तेरी
पकड़कर हाथ अब तो दुख सागर से छुड़ा दीजै।

[इस संगीत के समानान्तर अरविंद मीनाक्षी का संवाद]

अरविंद : यह कैसा बेहूदा संगीत है ?

मीनाक्षी : पहले सुन तो लीजिए !

अरविंद : अनाथालय का संगीत सुनूं ?

मीनाक्षी : बच्चे गा रहे हैं !

अरविंद : बच्चे···बच्चे···बच्चे ! गंगाराम !

गंगाराम : (आकर) जी, सरकार !

अरविंद : जाकर बन्द कराओ यह शोर । तुम बंगले का फाटक बन्द क्यों नहीं रखते ? ये यहां कैसे घुस आये ?

मीनाक्षी : फाटक खोलकर मैं जो यहां आयी हूं ।

अरविंद : उनसे कह दो, खबरदार आइन्दा यहां मत आएं !

[गंगाराम बाहर चला जाता है ।]

अरविंद : मुझे भीख मांगने वालों से बेहद चिढ़ है !

मीनाक्षी : पर वे तो अनाथ हैं ।

अरविंद : आखिर क्यों ?

मीनाक्षी : इन्हें छोड़कर ज़िन्दगी से भागने वाले लोग ही इनके ज़िम्मेदार हैं ।

अरविंद : भागने वाली स्त्री है ।

मीनाक्षी : उसे भगाने वाला पुरुष है ।

अरविंद : यह झूठ है ।

[गंगाराम का प्रवेश]

गंगाराम : चले गये ! ···भगा दिया···बहुत में···में···में··· में कर रहे थे । (अन्दर जाता है ।)

अरविंद : यह झूठ है !

मीनाक्षी : मेरा यह टेम्प्रेचर भी झूठ है ?

अरविंद : आपको टेम्प्रेचर है क्या ?

मीनाक्षी : देखिये···!

अरविंद : नहीं-नहीं, मुझे इस तरह छूना अच्छा नहीं लगता···प्लीज···चलिए किसी डाक्टर को दिखाते हैं···। मुझे इस तरह···प्लीज···!

[मीनाक्षी हंसती हुई अरविंद को जैसे पकड़ना चाहती है, वह ऊपर का संवाद बोलते हुए इधर-उधर भागते हैं ।]

मीनाक्षी : मेरे टेम्प्रेचर से आपका कोई मतलब नहीं ?

अरविंद : प्लीज, मेरी बात तो सुनो !

मीनाक्षी : अब मैं वह चित्र बनाऊंगी--भागता हुआ सफेद घोड़ा । उसके पीछे नन्हे-नन्हे बच्चे दौड़ रहे हैं । बहुत तेज़ हवा चल रही है । उससे भी तेज़ बारिश हो रही है । घोड़ा दुम दबाये भाग रहा है । कंधे के बाल हवा में जैसे उड़ रहे हैं । घोड़े का मुंह इस तरह सीधे शून्य में तना हुआ है । घोड़ा भाग रहा है···'गैलप'··· 'गैलप' बच्चे उससे तेज़ भाग रहे हैं । बच्चे उसे घेर लेते हैं, उसे पकड़ना चाहते हैं । घोड़ा गुस्से में पागल हो जाता है । वह बच्चों पर एकाएक टूट पड़ता है । वह बच्चों को रौंदने लगता है ।

अरविंद : मीनाक्षी···मीनाक्षी···!

[भीतर से दद्दा आते हैं।]

मीनाक्षी : उस घोड़े से रौंदे हुए बच्चे हवा में उड़ने लगते हैं···उड़ते हैं···उड़ते हैं। उड़ने लगते हैं··· उड़ते···!

[लड़खड़ाकर गिर पड़ती है। दद्दा दौड़कर सम्हालते हैं। मंच का प्रकाश बुझ जाता है। थोड़ी देर बाद जब प्रकाश लौटता है—दद्दा कुर्सी पर बैठे एक पत्रिका देख रहे हैं। गंगाराम प्लेट में दवा और पानी का गिलास लेकर आता है।]

गंगाराम : दवा खा लीजिये। (दद्दा जी दवा खाते हैं।) दद्दा जी, गलती मेरी ही थी। वह मैंने खराब वाला थर्मामीटर दे दिया था।

दद्दा : तेरे साहब कहां हैं ?

गंगाराम : अपने कमरे में चित्र बना रहे हैं।

दद्दा : यह देखो···यह चित्र उसी सुजाता का है उसने इतना अच्छा लेख लिखा है !

गंगाराम : (मैगजीन में देखता हुआ) ओह, यही हमारे साहब की पहली 'वाइफ' थीं ?

दद्दा : हां, देखो ज़रा ! ···इसे ले जाकर उन्हें दिखा तो दो···यह अभी डाक से आयी है।

गंगाराम : राम-राम, अभी कौन जाय उनके कमरे में।

दद्दा : अच्छा, मैं दे आता हूं।

गंगाराम : अभी साहब काम में लगे हैं, नाराज़ होंगे।

दद्दा : होने दो ! ···तुझे पता है, इन्होंने सुजाता के

संग कैसे-कैसे बर्ताव किये हैं। तब यह मेरे साथ ही रहते थे। यह दिन-रात चित्रों की दुनिया में खोये रहते, सुजाता इनकी सेवा करती। इन्हें परमेश्वर की तरह मानती।··· एक दिन की बात है—यही जाड़ों के दिन थे। यह सुजाता पर बेतरह बिगड़े हुए थे—बोले, 'सुजाता, तुम्हारी उपस्थिति मेरी कला के लिए मौत है।' सुजाता ने सिर झुकाकर कहा, 'आपकी कला मुझसे श्रेष्ठ है··· मुझे आप बेशक छोड़ सकते हैं।'

[अरविंद का भीतर से प्रवेश]

अरविंद : यह सब आज किसे और क्यों सुनाया जा रहा है ? आपका मतलब क्या है ?···गंगाराम, तू यहां क्यों खड़ा है ?

[गंगाराम भीतर जाता है।]

दद्दा : यह लीजिये मैगज़ीन···इसमें सुजाता बहू का लेख छपा है। देखिये उसका चित्र !

[मैगज़ीन को एक ओर फेंक देना]

दद्दा : क्यों, मेरे छू जाने से भी आपका···

अरविंद : मुझे आपका यह स्वभाव बिलकुल पसन्द नहीं है। किससे, क्या, कितना कहना चाहिए इतनी अक़्ल तो आपको होनी ही चाहिए।

दद्दा : याद है, सुजाता को झापड़ मारते हुए आपने क्या कहा था—उसने फिर भी आपका पांव

छूना चाहा था—तब आपने किस नफ़रत में कहा था—'डोन्ट टच मी; योर फिंगर्स, दे मेक मी फील वीकर। दे ड्रेन द स्ट्रेंग्थ आउट ऑफ माई बाडी।'

अरविंद : हां-हां, वह बिलकुल सच था। तब मैं कोई चित्र पूरा नहीं कर पाता था। आपके घर में पड़ा दिन गुज़ार रहा था। पर उसके बाद, मैंने कितने प्रसिद्ध चित्र बनाये···कितना नाम-सम्मान मिला मुझे। किस पद पर हूं आज··· कहां हूं!

दद्दा : जी हां, आज आप बहुत ऊंचाई पर हैं। आपकी इस ऊंचाई की सुजाता पूजा करती थी। तभी इसके अलावा उसे और कुछ नहीं चाहिए था—पर मीनाक्षी आपके बराबर है। वह आपसे प्रेम करती है—और वह प्रेम फल चाहता है।

अरविंद : आपके लिए प्रेम खेती करना है, पेड़ लगाना है।

दद्दा : वह फल खेती या पेड़ में नहीं लगता।

अरविंद : आप मुझे यहां काम करने देंगे या नहीं?

दद्दा : यह आपका बंगला है···आप है···मैं बिलकुल कल सुबह चला जाऊंगा। आज शाम मीनाक्षी के पापा को साफ बता दूंगा—अरविंद ब्याह नहीं करेगा, केवल प्रेम करता रहेगा!

'अनामिका' कलकत्ता के प्रस्तुतीकरण में श्यामानन्द जालान

'अनामिका' के प्रस्तुतीकरण में कुसुम गुप्ता

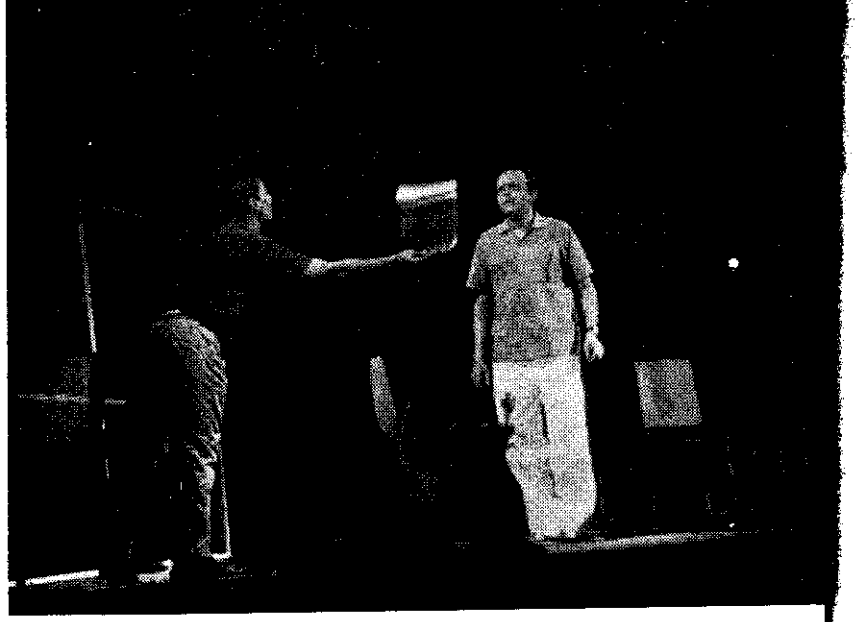

'अनामिका' के प्रस्तुतीकरण में श्यामानन्द जालान

इलाहाबाद के प्रथम प्रस्तुतीकरण में सुधीर की भूमिका में राज जोशी और गंगाराम के रूप में भोलानाथ मधुर

अरविंद : आप कुछ नहीं कह सकते !

दद्दा : मुझे कहना पड़ेगा; उन्हीं के बुलाने से मैं यहां आया हूं ।

अरविंद : धन्यवाद ! हम पापा को खुद जवाब दे लेंगे !

[तेज़ी से अन्दर जाते हैं। दद्दा उदास खड़े रह जाते हैं। गिरी हुई वही मैगजीन उठाते हैं। सहसा तेज़ी से सुधीर का प्रवेश।]

सुधीर : दद्दा जी, ग़ज़ब हो गया, ग़ज़ब !

दद्दा : क्या हो गया ?

[भीतर से गंगाराम दौड़ा आता है।]

सुधीर : एक बीड़ी पिला दीजिये ।

दद्दा : (देते हुए) बीड़ी का नाम ग़जब है क्या ?

सुधीर : यह बुरी चीज़ है न ! कल से नहीं पीऊंगा । गंगाराम, कान पकड़कर खड़ा हो जा !

गंगाराम : आपका, हुज़ूर ?

सुधीर : नहीं,इस बीड़ी का···ले,पकड़···ओह,जल गया!

गंगाराम : अरे, बचपना छोड़ो बाबू, बहू लाने की उमर हुई ।

सुधीर : थैंक्यू, गंगाराम ! बड़ा समझदार आदमी है । दद्दा जी, एक रुपये की रेज़गारी होगी आपके पास·· स्कूटर वाले को ज़रा···!

दद्दा : हां-हां, लो न ! (देते हुए) यही तुम ग़ज़ब लेकर आये थे ?

सुधीर : रुपया ग़ज़ब नहीं है क्या ? (जाने लगता है।)

गंगाराम : दद्दा जी, जरा रुपया तो देखूं···(देखकर) अजी रुकिये, यह रुपया खराब है !

सुधीर : जा, तुझे इनाम दिया !

[बाहर जाता है ।]

गंगाराम : अरे, यह तूफान है, तूफान !

दद्दा : अच्छा लड़का है । सब समझता है ।

गंगाराम : अजी, कान भी काटता है । (रुककर) दद्दा जी, आप कल ही जा रहे हैं ?

दद्दा : और क्या चाहते हो ?

गंगाराम : और रुकिये न !

दद्दा : तुम्हारे साहब···!

गंगाराम : साहब की कोई क्या कहे ? खाने को दौड़ता है यह बंगला···इतना उदास···मनहूस···चारों ओर यहीं ठूंठ कांटे । मीनाक्षी दीदी आ जाती हैं, सुधीर भइया आ जाते हैं, आप आ गये—यह बंगला जी उठता है !

[बाहर से सुधीर आता है ।]

सुधीर : हेलो गैंज़ेज़ गॉड !

गंगाराम : (परेशान) गंजा गॉड ?

सुधीर : अबे, तेरे नाम का अंग्रेज़ी अनुवाद कर दिया—गंगाराम—गैंज़ेज़ गॉड !

गंगाराम : अब सम्हालिये ! आप मुझे इस दुनिया में ज़िन्दा रहने देंगे या नहीं !

सुधीर : मर जा, मर जा, जल्दी कर, आबादी कम हो !

गंगाराम : (घबराहट में)हां हां हां, यह क्या कर रहे हैं···? फिर वही जुलुम···इन पौधों को मिलाकर चले गये, साहब ने मेरी वह खबर ली···वह खबर कि···

सुधीर : की खोबोर रे ?

गंगाराम : यह बीच वाली मादिन है···इसकी छूत से ये जो नर हैं न, सूख जाते हैं । आपने खामखाह इन्हें मिला दिया !

[दद्दा तेजी से हंसने लगते हैं । भीतर से अरविंद की पुकार आती है, गंगाराम भीतर जाता है ।]

दद्दा : मादा पौधे से नर पौधे सूख जाते हैं···कहीं सुना है ?

सुधीर : जैसा राजा, वैसी प्रजा···इस बंगले के नर-पौधे हैं ये !

दद्दा : हवा-पानी का असर हो सकता है, क्यों नहीं··· बेशक !

[भीतर से गंगाराम आता है ।]

गंगाराम : साहब बिगड़ रहे हैं, यहां बहुत शोर हो रहा है !

सुधीर : क्या···शोर ?

गंगाराम : हां-हां, शोर···शोर···!

सुधीर : (पुकारता है) सुनिये साहब, देखिये आपका नौकर ही इतना शोर कर रहा है ।

[गंगाराम भीतर भागता है।]

सुधीर : (ऊंचे स्वर में) आजकल शोर का ज़माना है। मेरी पिकनिक बेहद कामयाब रही है। यहां आकर गंगाराम की आदत खराब हो गयी है। कहावत है, जैसा राजा, वैसी प्रजा। हमारी पिकनिक बहुत शानदार थी। हमने वहां कुछ फैसला कर लिया है—जब प्यार किया तो डरना क्या !

[भीतर से अरविंद का चुपचाप प्रवेश]

सुधीर : (अनदेखे) और हम धीरे-धीरे क्यों बोलें ? हम कोई जनाना लोग हैं क्या ? और आजकल तो जनाना लोग जब इतना शोर करके बोलता है···चाऊं···चाऊं···चाऊं···चाऊं !

अरविंद : बन्द करो !

सुधीर : यस प्लीज !

अरविंद : यह क्या तमाशा है ?

सुधीर : यह क्या तमाशा है ?

अरविंद : मैं तुमसे पूछता हूं !

सुधीर : मैं तुमसे पूछता हूं।

अरविंद : बन्द करो यह बदतमीज़ी !

सुधीर : बन्द करो !

दद्दा : सुधीर, सुधीर···!

सुधीर : दद्दा, दद्दा···!

अरविंद : इसका दिमाग खराब है।

[सुधीर तेज़ी से हंस पड़ता है।]

अरविंद : आप लोगों को पता होना चाहिए, अगले सप्ताह मेरे और मीनाक्षी जी के नये चित्रों की प्रदर्शनी होने जा रही है। मैं उसी की तैयारी में लगा हूं, और आप लोग हैं कि···

सुधीर : आप लोग क्यों ?···अकेला मैं···। यह कहने की हिम्मत नहीं आपको, फिर क्या चित्र बनाते हैं ? जिस बिन्दु से रचना होती है, जब वहां मक्खी मरी और सड़ी···

अरविंद : बस···बस···आगे एक शब्द भी कहा तो···

सुधीर : जनाब, आगे इशारे से कहूंगा···।

अरविंद : (दद्दा से) यह आपको अच्छा लग रहा है न ?

दद्दा : मुझे ?

सुधीर : नहीं, मुझे !

[हंसने लगता है।]

अरविंद : बंद करो यह बदतमीज़ी ! मुझे यह बिलकुल बर्दाश्त नहीं। मैं नहीं चाहता यहां ··कोई···

सुधीर : (चिढ़ाता है) मैं नहीं चाहता···यहां···कोई···!

दूसरा अंक

•

[वही दृश्य। अन्तर केवल इतना कि 'वेस' पर अब केवल दो ही कैक्टस के गमले हैं—मादा कैक्टस नहीं है। सुबह के नौ बज रहे हैं। पृष्ठभूमि में वही नीलाम का बाजा बज रहा है। बाजा बन्द होने के साथ ही सुधीर का प्रवेश—बिलकुल नये सूटबूट में—मुंह से सीटी बजाकर कुछ गा रहा है और उस दिन का अखबार उलट रहा है। भीतर से गंगाराम आता है।]

गंगाराम : ओह, आप !

सुधीर : ओह, आप !

गंगाराम : आज तो बिलकुल हीरो लग रहे हो, भइया !

सुधीर : सच !···यह ले दस पैसे ! (टेबुल बजाते हुए) टी···की टी···की, आहा !···टी की, टी की, आहा !···ले, इसी तरह बजाकर ताल दे···मैं जरा टुइस्ट करूंगा !

गंगाराम : साहब सुनेंगे तो···

सुधीर : अरे, जान तो नहीं लेंगे···आ, बैठ···बजा।

[वह बजाता है। 'टी की, टी की, आहा' की बोल बोलता हुआ। सुधीर टुइस्ट कर रहा है।]

गंगाराम : बस भइया बस, मैं हाथ जोड़ता हूं।

सुधीर : अच्छा-अच्छा, जा ! अब सुन एक गाना···

[अंग्रेजी ढंग से]

हमारा एक्सीडेन्ट हो गया
हमारा स्वीट सेटिल्मेन्ट हो गया
हमारा होम गवर्नमेन्ट हो गया
अजी,
हमारा इंगेज्मेन्ट हो गया।
हमारा एक्सीडेन्ट हो गया।

[गंगाराम ताली बजाने लगा था, तभी गाउन पहने अरविंद का प्रवेश। गंगाराम दुम दबाकर भीतर भागता है।]

अरविंद : ओ हो···ओहो ! वाह वाह वाह ! आज कुछ मामला 'सीरियस' है···!

सुधीर : आज जरा टुइस्ट के मूड में हूं। मेरे मुंह से आज पहला गाना निकला है। और मैं इस नतीजे पर आया हूं—'वियोगी होगा पहला कवि, आह से निकला होगा गान'—यह ग़लत है—'सोल्जर होगा पहला कवि, धांय से निकला होगा गान !'

अरविंद : वाह !

सुधीर : (अखबार उठाना) लीजिये अखबार, और देखिये स्थानीय समाचार हिन्दी में !

अरविंद : ओ हो ! तो यह खबर है आज···बधाई । मिस कपूर से मिस्टर सुधीर का इंगेज्मेन्ट ! वाह, मान गया, ज़ोरदार आदमी हो ! गंगाराम, अपने बेबी साहब का मुंह मीठा कर !

सुधीर : अब बेबी नहीं । मिस कपूर ने कहा है—'देखिये जी, मुझे बेबी पसन्द नहीं है'···मैंने कहा, 'अजी, मुझे ही कौन पसन्द है···बस, लाइन क्लियर !

अरविंद : यानी मैं चार दिनों के लिए बाहर क्या गया, शहर में इतनी बड़ी घटना हो गयी ।

सुधीर : तभी तो हुई ।

अरविंद : आपकी दीदी कैसी हैं ?

सुधीर : अच्छी हैं, थोड़ा मुंह से ब्लड आ गया था··· हां-हां, चिन्ता करने की कोई बात नहीं । शरीर में जब जरूरत से ज्यादा खून हो जाता है तो नेचर···नेचर···

[अरविंद फोन करते हैं ।]

सुधीर : वह आपको फोन पर नहीं मिलेंगी !

अरविंद : प्लीज, ज़रा मुझे बात कर लेने दीजिये ।

सुधीर : बात···बात···बात···बात···बात···बात··· बात ।

अरविंद : सुधीर !

[सुधीर हंसता है । अरविंद फोन रखते हैं ।]

अरविंद : ब्लड कैसे आया ? क्यों आया ? यह कब की बात है ?

सुधीर : हां, ब्लड कैसे आया ? क्यों आया ?

अरविंद : कमाल है, यह मैं पूछ रहा हूं ।

सुधीर : यही मैं पूछ रहा हूं ।

[गंगाराम प्लेट में मिठाई लिये आता है ।]

अरविंद : इन्हें खिलाओ···मैं मीनाक्षी जी को देखने जा रहा हूं ।

सुधीर : हां-हां, आप कहां जा रहे हैं ? उन्हें कम्प्लीट रेस्ट के लिए कहा गया है । आप मेरे घर जायेंगे तो···

अरविंद : तो···!

सुधीर : तो···!

[अरविंद का तेज़ी से भीतर जाना]

गंगाराम : लीजिये, मुंह मीठा कर लीजिये !

सुधीर : दीजिये···कुछ तमीज सीखिये··दांत बन्द कीजिये···अब बोलिये···

[सुधीर मिठाई खा रहा है । गंगाराम मुंह बांधे खड़ा है ।]

अरविंद : बोलिये···बोलिये···अच्छा, अन्दर जाइये··· साहब को कपड़े पहनवाइये । अरे, जाओ न ।

[गंगाराम को छींक आती है ।]

सुधीर : अच्छा, तो अब तेरी नाक चल पड़ी । रुक तो सही, कहां है तेरी नाक !

[गंगाराम भीतर भागता है। सुधीर बैठे-बैठे मिठाई खा रहा है। अखबार पढ़ रहा है। टेलीफोन आता है।]

सुधीर : (उठाता है।) जी हां, उन्हीं के यहां से···क्या ? ···मैं ? आप बताइए कौन हैं ?···वह तो मालूम हो रहा है, आप एक औरत हैं···! आपका शुभ नाम ? श्रीमती दिवाकर जी··· यह तो आपकी हैसियत है···नाम क्या है···ही ही ! यह औरत लोग हंसती क्यों नहीं ?

[अरविंद भीतर से दूसरे वस्त्रों में निकलते हैं।]

सुधीर : आपका···। कोई 'शी' हैं ।

अरविंद : (फोन लेते हैं) जी हां, मैं बोल रहा हूं···जी, कल से हमारी पेंटिंग एग्ज़ीबिशन शुरू हो रही है···जी हां, ज़रूर···कल इसी समय आप यहां आ सकती हैं···जी, इस वक्त ?···नहीं, बिलकुल नहीं···ओह, आप मुझ पर कुछ लिखना चाहती हैं कल के पेपर में···अच्छा···थोड़ी देर बाद आ जाइये···!

[फोन रखते हैं।]

सुधीर : कमाल है, वह 'शी' मुझसे बोल रही थी कि वह···अरे···आप जा कहां रहे हैं ? कोई नयी

पेंटिंग बनाइये···जो पुरानी हो उसे नयी कीजिये···लड़कियां लोग तो बीमार होती ही रहती हैं ! और एक 'शी' आपके दर्शनों के लिए आ ही रही है !

अरविंद : ऐसा तुम्हें···!

सुधीर : शोभा नहीं देता ।

[अरविंद का प्रस्थान]

सुधीर : (पुकारता है)अबे ओ गंगारमवां !···गंगारमवां रे···!

गंगाराम : (आकर) फिर वही गांव की बोली !

सुधीर : एटेन्शन !

गंगाराम : भीतर बहुत काम पड़ा है, भइया !

सुधीर : अच्छा चल, बाहर का काम कर ! ले, पैर दबा ।

[गंगाराम सिर हिलाता है।]

सुधीर : अच्छा चल, एक गाना गा !

[गंगाराम सिर हिलाता है।]

सुधीर : अच्छा चल, रो···! बेटा, इन तीनों में से कोई एक काम कर, वरना···!

[गंगाराम हाथ जोड़ता है।]

सुधीर : (गुस्से में उठता है।) उल्लू के पट्ठे, यहां की परछाईं तुझ पर भी पड़ गयी !

गंगाराम : गाली मत दीजियेगा, हां···!

सुधीर : (गुस्से में चिढ़ाकर) गाली मत दीजियेगा, हां··· फिर क्या दूं, गोलगप्पे ? न हंसना, न गाना न,

रोना, अपने साहब की तरह वही कैक्टस !
वही फुन्न-फुन्न, वही छुन्न-छुन्न···। ('जाने लगता है।)

गंगाराम : भइया, आप नाराज़ हो गये।

सुधीर : अबे मैं कोई जनाना हूं क्या ?

गंगाराम : लीजिए, एक सिगरेट पी लीजिये···!

सुधीर : ये बात हुई न।···घूस देता है···चल, गाना सुना या रो, तभी रुकूंगा !

गंगाराम : अच्छा, बैठो·· गाता हूं ! (कान पर हाथ रखकर गाता है।)
उड़ जा हंस अपाने मुलुक को
अब इहां तुमरा कोई नहीं···!

सुधीर : आहा हा···वाह बेटा, क्या फटी आवाज़ में रोता है ! वह भी अब मरने का गाना गाता है···'अब इहां तुमरा कोई नहीं !'···क्यों नहीं ? यहीं तो सब कुछ है।

गंगाराम : भइया,यहां आकर सब कुछ भूल गया···एक दिन गुनगुना रहा था कि साहब ने डांट दिया !

सुधीर : इसीलिए तो डबल तनखाह देते हैं ! हो ही ही··· अच्छा, सुन···(गाता है।)
निबिया कै पेड़वा तवै निक लागै तवै
निक लागै,
आह, अब निबकौरी होय।
हाय राम, जब निबकौरी होय।

बाला जोवनवां जबै निक लागै, जबै निक लागै
अब सेजियां बलमवां होय
हाय राम, सेजिया बलमवां होय !
धिन तानी नानी नानी
धिन तानी नानी नानी···

[सुधीर उसी संगीत की धार में बहा चला जाता है। गंगाराम यही संगीत गुनगुनाता हुआ चीजें करीने से रखता है। कुछ ही क्षणों बाद श्रीमती दिवाकर का प्रवेश।]

गंगाराम : जी !

श्रीमती : अरविंद जी हैं ?

गंगाराम : जी, नहीं !···आपको टाइम दिया था ?

श्रीमती : दिया तो था···भाई, मुझे इस तरह घूरो नहीं।

गंगाराम : जी···!···आप कहां से आयी हैं ?

श्रीमती : यह सब बताना ज़रूरी है क्या ?

गंगाराम : ऐसे ही पूछा।

श्रीमती : अच्छा किया···।

गंगाराम : जी···!···ओह, साहब आ गये···। (अरविंद का प्रवेश। उनके हाथ में काग़ज़ में पैक की हुई कई पेंटिंग्स हैं।) आपसे मिलने आयी हैं !
[गंगाराम का भीतर प्रस्थान]

श्रीमती : नमस्ते···श्रीमती एस० दिवाकर···।

अरविंद : ओह ! आप ही हैं श्रीमती एस० दिवाकर। बड़ी खुशी हुई आप से मिलकर। बैठिये···आप

तो बहुत अच्छा लिखती हैं···आधुनिक चित्र-कला पर आपकी कई समीक्षाएं देखी हैं···। काफी अच्छी समझ है !

श्रीमती : धन्यवाद !

अरविंद : बड़ी अच्छी दृष्टि है आपकी !

[श्रीमती चुप हैं।]

अरविंद : एक नयी आर्टिस्ट—मीनाक्षी के चित्र भी कल की चित्र-प्रदर्शनी में होंगे···। यह देखिये उनके कुछ चित्र···।

[मीनाक्षी के बनाये हुए चित्रों को सुजाता बड़े ध्यान से देखती है।]

श्रीमती : बहुत अच्छे चित्र हैं !···ओह···आश्चर्य ! वाह···!

अरविंद : ये चित्र इतने अच्छे हैं ?

श्रीमती : बेहद सहज और अनुभूतिमय···।

अरविंद : ये उनके शुरू-शुरू के चित्र हैं।

श्रीमती : क्या बात है···वाह !

[अरविंद को आश्चर्य होता है।]

अरविंद : और ये चित्र हैं—जब से वह मेरे साथ चित्र बनाने लगी हैं !

[श्रीमती चित्र देख रही हैं।]

अरविंद : कैसे हैं ये चित्र ?

[श्रीमती चुप हैं।]

अरविंद : अब मैं आपको अपना एक नया चित्र दिखाता हूं।

[अन्दर जाते हैं। श्रीमती दिवाकर चित्र देख रही हैं। अरविंद अपनी नयी पेंटिंग लिये आते हैं।]

अरविंद : यह मेरी लेटेस्ट पेंटिंग है !

[श्रीमती दिवाकर चित्र देखती है।]

अरविंद : कैसी लगी ?

श्रीमती : पिछले साल इंटरनेशनल पेंटिंग एग्जीबिशन में बिलकुल इसी तरह एक इटैलियन पेंटिंग देखी थी !

अरविंद : ऐसा आपको नहीं कहना चाहिए। मेरा मतलब···

श्रीमती : पर देखा था !

अरविंद : आप पेंटिंग के बारे में कितना जानती हैं ?

श्रीमती : मुझे इम्तिहान देना होगा ?

अरविंद : नहीं, वैसे ही पूछा !

श्रीमती : जितना कुछ हिन्दुस्तान में है—पढ़ा, देखा। कुछ समझा !

अरविंद : आप बाम्बे की रहने वाली हैं ?

श्रीमती : क्यों ? इस तरह बॉब हेयर वाली, काले चश्मे वाली, आर्ट में इतनी इन्टरेस्टेड, केवल बम्बई की ही औरत हो सकती है ?

अरविंद : मेरा ऐसा अनुमान है !

[विराम]

आप इतनी मॉडर्न हैं···हिन्दुस्तान में आप

जैसी औरतें कहां मिलती हैं !

श्रीमती : आप जैसे पुरुष कहां मिलते हैं ?

अरविंद : पुरुषों की कमी नहीं है ।

श्रीमती : स्त्रियों की भी कमी नहीं है ।

अरविंद : पुरुष हर क्षण विकास करता है ।

श्रीमती : स्त्री इससे भी ज़्यादा तेज़ है । वह इतनी जल्दी बम्बई वाली हो जाती है । वह इतनी जल्दी प्रसिद्ध हो जाती है । वह किसी से कभी भी मिलने के लिए वक्त पा जाती है । वह बुद्धू से दृष्टिवान हो सकती है । वह कुछ भी···

अरविंद : यह सब क्या कह रही हैं आप ?

श्रीमती : औरत···औरत···मादा···।

अरविंद : आप में बड़ा ह्यूमर है ।

श्रीमती : आप औरत को सिर्फ़ मादा समझते हैं न !

[बनावटी हंसी]

अरविंद : माफ कीजियेगा, अभी आपको पेंटिंग के बारे में अपनी समझ गहरी करनी होगी ।

श्रीमती : इतनी ही समझ से जब आप जैसे चित्रकारों की चीज़ें विदेशी चित्रों की नकल लगती हैं तो···।

अरविंद : आप कैसी बातें करती हैं ! आपको···

श्रीमती : औरत बहुत तेज़ी से विकास करती है।

अरविंद : आप मुझसे मिलने आयी हैं ।

श्रीमती : औरत इतनी बदल सकती है !

अरविंद : आपको क़तई कुछ समझ नहीं है ।

श्रीमती : औरत कुछ भी सह सकती है, और कुछ भी नहीं ।

अरविंद : आपको ये क्लासरूम स्केच श्रेष्ठ चित्र लगते हैं, और ये चित्र आपको प्रभावहीन···!

श्रीमती : स्त्री सच भी बोल सकती है ।

अरविंद : नॉनसेन्स···!

श्रीमती : आर्टिस्ट में इतना गुस्सा ! ···देखिये···ये चित्र सच्चे हैं, जीवन जैसे···। ये चित्र झूठे हैं, ये चित्र और झूठे हैं···।

अरविंद : आपको बिलकुल समझ नहीं है !

[श्रीमती हंसती है ।]

अरविंद : (आवेश में) आपने खामखाह भ्रम फैला रखा है ! 'यू हैव नो मैनर्स ! ···प्लीज, स्टॉप !'

[मीनाक्षी का प्रवेश]

अरविंद : आप हैं मीनाक्षी जी···आप हैं श्रीमती एस० दिवाकर—आर्ट क्रिटिक···हा-हा !

[दोनों परस्पर खुश होती हैं ।]

अरविंद : डॉक्टरों ने आपको मना किया है कि आप···

मीनाक्षी : मेरी ये पेंटिंग्स लेकर क्यों चले आये ?

अरविंद : इन्हें प्रदर्शनी में रखना है !

मीनाक्षी : नहीं···कभी नहीं !

अरविंद : क्या ?

मीनाक्षी : इन चित्रों का प्रदर्शन नहीं चाहती !

[अरविंद साश्चर्य चुप]

मीनाक्षी : यह चित्र मेरा अपना दस्तावेज़ है !

[विराम]

अरविंद : बैठिए···आपको इस तरह···।

मीनाक्षी : मैं अब इतनी निर्बल नहीं !

श्रीमती : आपकी यात्रा की शुरूआत बड़ी थी···आपके बनाये हुए ये नंगे शिशु, वाह ! दरअसल यही 'क्रियेशन' है !

मीनाक्षी : सच !

श्रीमती : इसके लिए कोई शब्द नहीं !

मीनाक्षी : और ये चित्र ?

श्रीमती : यहीं से रचना की जगह बनावट शुरू होती है···ऐसा लगता है, जैसे···!

अरविंद : अब आप जा सकती हैं।

श्रीमती : देखिये इन दोनों चित्रों में सहज-असहज का फ़र्क़···।

अरविंद : अब मेरे पास वक्त नहीं है।

श्रीमती : एक होती है सृष्टि···एक होती है···

अरविंद : मेहरबानी करके अब आप यहां से जाइए।

श्रीमती : सृष्टि वहां होती है जहां दो ऐसे तत्त्व आपस में सहज ही मिलते हों···।

अरविंद : बन्द कीजिये यह बकवास !

श्रीमती : (जाती हुई मीनाक्षी से) आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। पर उतनी ही दया भी आती है।

(जाती है।) काश, आप इनके सम्पर्क में न आयी होतीं !

अरविंद : ओह, तेरी यह हिम्मत ! ···बद्तमीज़···!

श्रीमती : शुक्रिया !

[श्रीमती दिवाकर का प्रस्थान]

अरविंद : यह कैसी औरत है ! फ्रस्टेटेड···नॉनसेन्स !

मीनाक्षी : ओह, लगता है मेरा सिर फट जायगा।

[निढाल कुर्सी पर बैठ गयी है।]

अरविंद : लगता है, यह औरत नहीं कुछ और थी !

[मीनाक्षी आंखें बन्द किये पड़ी है। उसी समय पृष्ठभूमि से अनाथालय के बच्चों का संगीत उठता है।]

किसी ने स्वप्न में देखा हमें।
हम नहीं थे, कुछ नहीं था
हम हुए, सब रो पड़े
कौन जाने, कौन माने—
किसी ने स्वप्न में देखा हमें···!

[यह संगीत जैसे ही शुरू हुआ था, अरविंद नफ़रत से भर गये थे। गंगाराम को पुकारा था—'ये फिर कैसे आये ? इन्हें फौरन बाहर करो, नहीं तो'—मीनाक्षी ने रोककर कहा था—'रोको नहीं, मुझे सुनने दो।']

मीनाक्षी : गंगाराम, ये लो, ये सारे रुपये उन्हें दे देना··· कहना अब वे यहां कभी न आयें !

[गंगाराम लेकर जाता है।]

मीनाक्षी : कितने दिन हो गये थे, कोई संगीत नहीं सुना ···आपको क्या प्रिय है ?

अरविंद : तुम !

मीनाक्षी : बन्द करो यह बकवास···!

अरविंद : ये चित्र तुम्हें यश, नाम देंगे ।

मीनाक्षी : नहीं ।

अरविंद : मैं तुम्हारे साथ दिन-रात काम करूंगा ।

मनाक्षी : मुझे आसरा नहीं चाहिए !

अरविंद : तुम में आश्चर्यजनक प्रतिभा है ।

मीनाक्षी : बस, बस···!

अरविंद : मैं तुमसे ब्याह करने को तैयार हूं ।

मीनाक्षी : मैं कोई चिड़िया नहीं ।

[विराम]

मीनाक्षी : मैंने एक चमगादड़ का चित्र बनाया है । (हंस पड़ती है ।) सुनसान जंगल के बाहर··· बंजर धरती···शाम का वक्त है···हवा में एक काला चमगादड़ उड़ रहा है ।

अरविंद : तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है !

मीनाक्षी : वही चमगादड़ तुम हो !

अरविंद : मीनाक्षी···मीनाक्षी···!

मीनाक्षी : तुम सोचते हो, मैं पागलपन का बहाना लेकर अपने सच को प्रकट करूंगी—जैसे तुम आर्ट का बहाना लेकर अपने को छिपाये बैठे हो··· जैसे वह सुजाता जो अभी मिसेज़ दिवाकर के

रूप में अपने को छिपाकर स्वयं को प्रकट करने आयी थी ।

अरविंद : वह सुजाता थी ?

मीनाक्षी : वैसी औरत और कौन हो सकती थी···! चमगादड़···चमगादड़···तुम्हारा सम्पर्क और क्या दे सकता है !

अरविंद : यह सरासर झूठ है···!

मीनाक्षी : वे लोग भी बाहर से इतने ही आकर्षक पुरुष होते हैं ।

अरविंद : लगता है, तुम पर उसी सुजाता की हवा लग गयी ?

मीनाक्षी : हम दोनों बेवकूफ थे··· (हंसती है ।) नॉनसेन्स, पत्नी···प्रेमिका···लव···। हा···हा···! जब सीधे-साफ कहने की हमें हिम्मत नहीं होती, कि हमें तुमसे फायदा होगा, आराम और नाम मिलेगा···उस स्वार्थ को छिपाने के लिए तब हम झूठी भाषा बोलते हैं···मुझे तुमसे प्यार है, इश्क़ है ! ···आई लव यू···हा···हा··· हा···!

[मीनाक्षी तेज़ी से जाने लगती है । लड़खड़ाकर गिरने लगती है । खांसी आती है । सम्हलकर उठती है । अपने चित्र लेती है और तेज़ी से प्रस्थान । अरविंद मूर्तिवत खड़े रह गये हैं । अपने चित्र को उठाकर देखते हैं । एकटक देखते हैं और फाड़ डालते हैं । कुछ ही क्षणों बाद उनकी निगाह कैक्टस पौधों पर जाती है ।]

अरविंद : गंगाराम, यहां की मादा कैक्टस कहां गयी ? (गंगाराम आता है।) बोलो, कहां है ? वही औरत तो नहीं ले गयी ?···कहां है वह मादा कैक्टस ?

गंगाराम : माली के पास, हुजूर !

अरविंद : क्यों ?

गंगाराम : क्या बताऊं, हुजूर···जाने कैसे साहब, वह सूख गयी !

अरविंद : क्या बकते हो ? वह छुई-मुई का कोई पौधा नहीं; वह कभी नहीं सूखती···मादा कैक्टस कभी नहीं सूखती !

गंगाराम : मैं उसे ले आता हूं, हुजूर !

[गंगाराम जाता है।]

अरविंद : नौकर-माली सबका दिमाग़ खराब हुआ है ! जो मुंह में आया कह दिया ! (सहसा बाहर देखता है।) कौन ?···सुधीर···बेबी···वहां क्यों बैठे हो ? आओ···बात क्या है ? यहां आओ !

आवाज़ : नहीं आता !

[अरविंद जाकर उसे अपने संग ले आते हैं।]

सुधीर : छोड़ो जी, मैं कोई पिये हूं क्या ?

अरविंद : सुधीर !

सुधीर : अरविंद···!···कमल···भौंरा ! भ्रमर ! (हंसता है।) बताइये, क्या है मेरे हाथ में ? (सहसा) बताओ, क्या है मेरे हाथ में ?···

(ढंग बदलकर) रउंवा बतायीं न, हमरे हथवा मा का है ? ओहो, आप सोचते हैं, मैंने कुछ पी रखी है। (तेज़ हिचकी) घबरा गये !··· बताइये, 'ह्वाट इज दिस ?'

अरविंद : कोई चित्र है !

सुधीर : ठीक···'फिफ्टी परसेन्ट करेक्ट' !···किसका चित्र ?

अरविंद : मीनाक्षी का बनाया हुआ !

सुधीर : नहीं, नहीं···नहीं।

अरविंद : फिर यह कुछ और ही होगा !

सुधीर : बिलकुल ग़लत !

अरविंद : कोई तुम्हारी चीज़ !

सुधीर : फिर ग़लत।

अरविंद : अच्छा मैं हार गया, तुम्हीं बताओ !

सुधीर : पहले वचन दीजिये, इसे आप चित्र-प्रदर्शनी में रखेंगे।

अरविंद : चलो, वादा करता हूं।

सुधीर : यह देखिये लाजवाब···एक्सरे चित्र !··· मीनाक्षी दीदी के दोनों फेफड़ों की तसवीर···।

अरविंद : बकवास !···आप लोग यह सिद्ध करना चाहते हैं, इस सबकी जिम्मेदारी केवल मुझ पर है।

सुधीर : हिरन एक चिड़िया है।

अरविंद : सब कुछ वही ब्याह ही होता है क्या ?

सुधीर : सब कुछ वही भूख होती है, जिसे बड़े-बड़े नाम दिये जाते हैं—कला, प्रेम, इश्क़···ब्याह··· गॉड···ब्यूटीफुल···! पर मूल वही भूख है···

अरविंद : भूख ?···मैं भी उतना ही भूखा हूं।

सुधीर : क्योंकि तू हर औरत को केवल मादा समझता है···तू उसे इतना छोटा करके अपने अहं की···

अरविंद : मैं भी तुम्हारे इसी चमगादड़ी समाज से ही···

सुधीर : इस चमगादड़ को फायर क्यों नहीं किया ?

अरविंद : तभी तो चित्र बनाता रहा···तभी तो मेरा यह ऑर्डर था कि इस अहाते में कोई बन्दूक नहीं चला सकता···कोई यहां गा नहीं सकता···कोई बच्चा-लड़का यहां झांक नहीं सकता···कोई गा-रो नहीं सकता !

सुधीर : चमगादड़ ! चमगादड़ !

अरविंद : जंगल ! जंगल !!

[दुहराते हैं।]

सुधीर : पर नर कैक्टस···मादा कैक्टस को सुखाता रहा···और किस्से कुछ और ही बुझाता रहा !

अरविंद : वह इसे सच क्यों मानती रही ? इसे चैलेंज क्यों नहीं किया ?

सुधीर : हिरन एक चिड़िया है !

अरविंद : सारा कसूर उसी पति का है, उसी प्रेमी का, जिसके कंधे पर स्त्री शव की तरह लेट जाना चाहती है !···देखो मैं तब से आज तक चित्र नहीं बना पाता, केवल नकल करता हूं··· नकल···! इस जंगल में जहां केवल बबूल-कैक्टस-बेरी और कंटीले वृक्षों, पौधों, झाड़-झंखाड़ों से पूरा आसमान भरा हो, जहां सब कुछ बाड़ों, क्यारियों, खेतों, धर्मों, अधिकारों में बांट और बांध दिया गया हो, जहां नीचे सांप, बिच्छू, दीमक, काक्रोच से एक इंच पृथ्वी खाली न हो, जहां की हवा में अनाथालय के गीत, भूत-प्रेतों की सांसें हों, वहां के आसमान में चमगादड़ नहीं तो क्या हंस उड़ेंगे ?···

[इसमें सुधीर भी अपना स्वर मिला देता है।]

अरविंद : तेरी मुट्ठी में पश्चाताप है !

सुधीर : गलत।

अरविंद : तेरी मुट्ठी में गुस्सा है।

सुधीर : आगे···!

अरविंद : यह अर्थहीन है···महज़ शौकिया···! ठीक जैसे हमारा जीवन, कला, सृजन,···ब्याह, गृहस्थी, प्रेम !···इसमें क्रिया नहीं, केवल प्रतिक्रिया है···इसमें अनुभव नहीं, दिखावा है···वर्तमान नहीं, भूत···गति नहीं, हत्या···हत्या नहीं—आत्महत्या···प्रेम नहीं, कुंठा···ब्याह नहीं, रोजगार···जीवन नहीं···जीवन नहीं···!

[धीरे-धीरे दोनों पर से रोशनी बुझ जाती है।

जैसे ही वही रोशनी अकेले सुधीर पर लौटती है, पीछे नीलाम का बाजा उभर जाता है।]

अरविंद : अब बताओ क्या है मेरी मुट्ठी में ?···बताओ कोई क्या है इस मुट्ठी में ?···अरे, चीजें नीलाम तो हो गयीं—फिर यह नीलाम का बाजा क्यों बज रहा है ?···ओह, अब समझा, अभी मेरी मुट्ठी की चीज़ नहीं बिकी है। तो बताओ, क्या है मेरी मुट्ठी में ?

[पीछे एक-एक कर सुजाता, मीनाक्षी और अरविंद दिखते हैं।]

सुजाता : मैं बताती हूं !

सुधीर : तू बता चुकी !

सुजाता : नहीं, तूने मुझे पूरा अवसर नहीं दिया।

सुधीर : तू सदा यही कहेगी···तू धर्मपत्नी है न···यही तेरा घमंड है···जब तू पास थी तब केवल वही पत्नी थी, तेरी वह स्त्री गायब थी···अब जब दूर है···तब वही स्त्री बदला लेना चाहती है ···पर बदला किससे ?

सुजाता : पता नहीं।

सुधीर : फिर जाओ···भात-दाल खाओ···पलंग पर सोओ···और दिखाओ, मैं स्त्री हूं···पर पता नहीं। हाय-हाय···पता नहीं।···बताओ, क्या है मेरी मुट्ठी में ?

मीनाक्षी : मैं बताती हूं।

सुधीर : तू बता चुकी !··· 'नॉनसेन्स'···! ओह! ···पर तू यह झूठी शिकायत नहीं कर सकती, तुझे पूरा अवसर नहीं दिया गया।

मीनाक्षी : अवसर से क्या ?

सुधीर : तुझे इतनी छूट भी दी गयी।

मीनाक्षी : वह अवसर···वह छूट···उसी मनुष्य का दिया हुआ था।

सुधीर : मनुष्य ?

मीनाक्षी : मनुष्य शासित समाज का मनुष्य···!

सुधीर : तूने ऐसा होने क्यों दिया ?

मीनाक्षी : तूने ऐसा क्यों किया ?

सुधीर : तू प्रेमिका थी, फिर भी उसी ब्याह के चक्कर में !

मीनाक्षी : क्यों···क्यों···?

सुधीर : पता नहीं···

[मीनाक्षी हंसती है।]

सुधीर : हंसती है···!

मीनाक्षी : भाईजान, तूने भी वही शादी की···!

सुधीर : शादी नहीं, ब्याह किया है···बैंड-बाजे के साथ नहीं, डंके की चोट पर।

मीनाक्षी : रखोगे उसी घर में ही न !

सुधीर : बाहर।

मीनाक्षी : क्या घर, क्या बाहर···!

सुधीर : बाहर···और बाहर।

मीनाक्षी : पापा के ही पैसों पर···!

सुधीर : बकवास।

मीनाक्षी : लफ़्फ़ाजी···?

सुधीर : रियल्टी···।

मीनाक्षी : इस्केप।

सुधीर : शट-अप !

[मीनाक्षी हंसती है, उसे तेज खांसी आ जाती है।]

सुधीर : अब बोलो, क्या है मेरी मुट्ठी में ?

अरविंद : मुट्ठी खाली है।

सुधीर : यह तू कहता है ?

अरविंद : जानता हूं उस मुट्ठी का राज़···।

सुधीर : हिरन एक चिड़िया है।

अरविंद : युवक महज शब्द है।

सुधीर : शब्द तू है···हम एक्शन हैं···।

अरविंद : एक्शन वही चिड़िया है।

सुधीर : और तू 'वेजीटेरियन' है।

अरविंद : चिड़िया एक शिकार है।

सुधीर : और तू चमगादड़ है।

अरविंद : तेरी मुट्ठी खाली है।

सुधीर : ऐसा तू नहीं कह सकता !

अरविंद : मैं जानता हूं उस मुट्ठी का राज़ !

सुधीर : हिरन एक चिड़िया है ?

अरविंद : तू अपने को मुझसे अलग···विशेष···स्पेशल साबित करना चाहता है···? चिड़ियों पर बंदूक चलाकर···उन्हें जाल में फंसाकर···उसी मिस कपूर को खुश कर···और अंत में वही चमगादड़ी शादी कर !

सुधीर : ख़बरदार !

अरविंद : मैं भी एक दिन तुम्हारी ही तरह था···तेरी मिस कपूर की ही तरह मैंने भी सुजाता से शादी की···और धीरे-धीरे मेरे मन के आसमान में वही मनहूस चमगादड़ उड़ने लगा···

सुधीर : तू अपने को 'जस्टीफाई' करने चला है।

अरविंद : और तेरा यह नाटक क्या है ?

सुधीर : तू ही बता न···पर सावधान, एक शब्द···झूठ ···नहीं ? ख़बरदार···!

अरविंद : यह मादा कैक्टस···हमारे झूठे···नकली···मरे हुए समाज का झूठा प्रतीक···झूठ को झूठ से ही हम छिपाना चाहते हैं···। चारों ओर वही चमगादड़ उड़ रहे हैं।···चमगादड़···!

[अरविंद के स्वर में सुधीर का भी स्वर मिल जाता है। रात के चार बजते हैं···आवाज़]

सुधीर : ओह, सुबह के चार बज गये।···यह भीड़ यहां अब तक बैठी है·· लगता है, यहां कोई मर गया है···लोग उसी की लाश के लिये बैठे हैं। कहां है वह दरवाज़ा जिसके भीतर वह मरा है ?···आह···यह घर है या क़ैदखाना ?···

कहां है इस जेलखाने का वह पिछला दरवाज़ा,
जहां से वह लाश बाहर फेंक दी जायगी
और एक सजी हुई अर्थी वहां से निकलेगी !
नहीं, नहीं, मैं इस शवयात्रा में नहीं रहूंगा।
नहीं ···नहीं !

[सुजाता, मीनाक्षी और अरविंद बढ़ते हैं—जैसे उनके कंधों पर वही अर्थी रखी हो।]

सुधीर : ये लोग ?···कहां जा रहे हैं ?···कौन हो ?
कहां जाते हो ? क्यों ? कहां ? कैसे ? किससे ?
किसके लिए ? (तेजी से हंसता है।)

[वे एक ओर जैसे यात्रा में चल रहे हैं।]

सुधीर : अब बताओ क्या है मेरी मुट्ठी में ?···बताओ
···नहीं बोलोगे ?···बोलो···क्या है ?···अरे,
अब भी नहीं बता सकते ?

सभी : (एक स्वर में) झूठ है।

सुधीर : झूठ क्यों है ?

सभी : है।

सुधीर : (चिढ़ाता है।) है।···हैय · हैय···

सभी : है ?

सुधीर : क्यों ?

सभी : (चिढ़ाते हैं।) कयों···? कियों · किइयौं ··

●●